भगवान् श्रीसनत्कुमाराचार्यो विजयतेतराम् ।

स्मर्तार्षितं हारि विशल्यघोगलाभदुर्जनस्यार्करिपोरिवाद्भुतम् ।
वदैव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम् ।।

अखिलभारतवर्षीय—

सुप्रसिद्ध विद्वानों की प्रामाणिक—

घोषणा

अर्थात्

...यों द्वारा प्रसारित भ्रमका निराकरण ।

प्रकाशक—

स्वामी परमात्मानन्द शास्त्री,

मन्त्री—उदासीनसङ्घ, काशी ।

बी. के. शास्त्री द्वारा—ज्योतिष प्रकाश प्रेस,
विश्वेश्वरगंज, बनारस सिटी में मुद्रित । ३१२

॥ श्रीमदुदासीनाचार्य्यश्रीचन्द्रभगवत्पादा विजयन्तेतराम् ॥

विकासके सज्जनकैरवाणां विग्लापके दुर्ज्जनपङ्कजानाम्।
श्रीचन्द्रचन्द्रे परिवीततन्द्रेऽचिरं चकोरत्वमुपैतु चित्तम् ॥
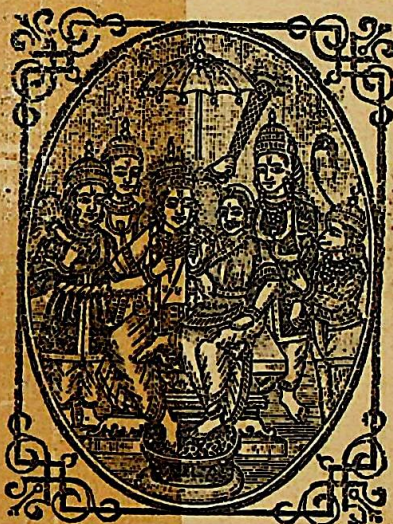
रामं रामानुजं वन्दे भरतं भरतानुजम्।
जननीं जानकीं वन्दे हनुमन्तं पुनः पुनः ॥

श्रीश्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ के विषय में दशनामी साधुओं द्वारा विपरीत फैलाये हुये भ्रम का निवारण-करते हुये अखिलभारतवर्षीय सुप्रसिद्ध-विद्वानों की घोषणा।

प्रकाशक—स्वामी परमात्मानन्द शास्त्री,
मन्त्री—उदासीनसङ्घ, काशी।

श्री श्रीचन्द्राचार्यो विजयतेतराम् ।

विवेकभ्रष्टानतिपापतत्परान् पराङ्गनाधर्मविनाशकान् खलान् ।
विचूर्णयन्तो मुनयो नमन्ति यं तं वैधसं वालयतिं नमामि ॥
कुलावधूते हि कुलाङ्गनाभिर्विस्वादिकाभिर्ननु दीक्षिता ये ।
कुलामृतञ्चैव सदा पिवन्ति कुलव्रतं ते खलु धारयन्ति ॥

भारतवर्ष में कौन नहीं जानता कि सनातनधर्म के गूढ रहस्यों के प्रकाण्डव्याख्याता श्रीयुक्त वेददर्शनाचार्य पं० गंगेश्वरानन्दजी महाराज अनेक वर्षों से सनातनधर्म महामन्दिर के एक अद्वितीय स्तम्भ बने हुये हैं। आपने सनातनधर्म का कार्य करने में जिन २ परिस्थितियों का सामना किया है उनका यदि कुछ भी दिग्दर्शन कराया जाय तो एक वड़ा पुस्तक वन सकता है। विद्याध्ययन करने के बाद ही आपको सनातनधर्म की रक्षाके लिये सिन्ध जाना पड़ा। वहां पर आपने जो कार्य किया उसे कौन सनातनधर्मी भुला सकता है। उसी समय हरिद्वार का कुम्भ आगया। स्वामीजी भी धर्मप्रचारार्थ हरिद्वार आये थे। और यहां १॥ मास तक प्रतिदिन सनातनधर्म पर व्याख्यान होते रहे। इसके वाद फिर सिन्ध में ही वापिस जाकर सनातनधर्म का प्रचार करते रहे। वहां से कराची गये और वहां पर भी प्रचार किया। कोयटा में तो वहुत काल तक रहना पड़ा। इसके बाद आपने शिकारपुर में रहना आवश्यक समझा क्योंकि उस समय शिकारपुर में विपक्षियों

का बहुत ही प्रभाव पड़ चुका था। विपक्षी लोग खुल्लमखुल्ला विधवा विवाहादि धर्मघातक रीतियों का तत्परता से प्रचार कर रहे थे। इस लिये स्वामीजी को कई मास तक अनेक वार विपक्षियों के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा। इस लिये विपक्षियों को वहां से भागना पड़ा। यह बात उस देश के सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। उसी समय शिकारपुर में स्वामीजी महाराज ने सनातनधर्म सभाकी स्थापना भी कराई। जो कि अभी तक सनातनधर्म का कार्य प्राणपणसे कर रही हैं। और सनातनधर्म युवक सभाकी स्थापना भी आपके उद्योग से ही वहां की गई थी। इसके वाद सक्खर में 'सिन्ध-विलोचिस्तान' सनातनधर्म प्रतिनिधि सभाकी स्थापना भी स्वामीजी ने कराई।

इसके वाद सिन्ध हैदराबाद आदि प्रधान २ नगरों में भ्रमण करके श्रीस्वामीजी ने सनातनधर्म का प्रचार किया। आपके उद्योग से 'सनातन वेदस्थापकमण्डल, नामकी एक महती सभा वहां पर स्थापित की गई। वह अभी तक सुचारु रूपमें अपना कार्य कर रही है। उसी समय एक वेद भगवान् का मन्दिर भी बनवाया गया। अभी तक प्रतिवर्ष उस मन्दिर की प्रतिष्ठा के लिये २ महोत्सव किये जाते हैं। इत्यादि अनेक कार्य श्रीस्वामीजी ने उन देशों में किये हैं, जहां पर सनातनधर्म का कार्य करना किसी साधारण व्यक्ति की शक्ति से परे था।

स्वामीजी के लोकोत्तर धर्मप्रचार के कार्यों को जानने वाले सनातन-धर्म के कर्णधार पण्डितप्रवर श्रीकालूरामजी, तथा वर्णाश्रमस्वराज्य संघ के प्रधान मंत्री श्रीदेवनायकाचार्य आदि प्रमुख नेताओं ने आपके विषय में मुक्तकण्ठसे आदरणीय भाव प्रगट किये हैं।

श्रीस्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज के २०-२५ ही प्रवचनों ने पंजाब का कलेवर बदल दिया। जो कार्य आपने किया है उसे हजारों उपदेशक भी नहीं कर सकते थे। ले०—पं० कालूराम शास्त्री, हिन्दूपत्र—भा० पद १९९० ।

गंगेश्वरानन्दजी 'सनातनधर्म के, विशेष प्रचारक हैं। लेखक पं० देवनायकाचार्यजी अ० भा० व० व० आ० स्व० सं० प्रधान मंत्री पण्डित पत्र ७ अगस्त १९३३ में। इसी प्रकार सनातनधर्म की अनेक सभाओं ने आपको अभिनन्दनपत्रप्रदान किये हैं। इसी वर्ष १४ सितम्बर को स्थानीय सनातनधर्मप्रतिनिधि सभा रावलपिण्डी ने स्वामीजी के लिये अभिनन्दनपत्र दिये हैं।

आप वेदों के साथ पुराणों की एकवाक्यता करने में बहुत दिनों से प्रसिद्ध हैं।

बहुत महानुभावों का आग्रह था कि श्रीस्वामीजी अपने प्रवचन में जिन रहस्यों को प्रकाशित करते हैं उन्हें सर्वसाधारण सनातनधर्माव-लम्बि जनता के लाभ के लिये पुस्तकाकार में अंकित करके छपाया जाय। इसलिये स्वामीजी ने श्रौतमुनिचरितामृत नामकी पुस्तक निर्माण की। इस पुस्तक में आदि से अन्त तक सनातनधर्म रहस्यों का ही प्रतिपादन है। इस पुस्तक को पढ़ने वाला सनातनधर्मावलम्बि एक बालक भी विपक्षियों का मुखमर्दन करने में समर्थ हो सकता है। विपक्षी लोग कोलाहल किया करते थे कि मूर्तिपूजा तथा श्राद्धादि पौरा-णिक हैं। क्योंकि इस विषय में किसी मूलसंहिता का प्रमाण नहीं मिलता है। इसलिये स्वामीजी ने मूलसंहिता के मंत्रों से ही सभी

अवतारों की लीलाओं का प्रतिपादन किया है। वेद में मूर्तिपूजा-विधान, वेद से श्राद्ध आदि सनातनधर्म के सभी विषय उक्त पुस्तक में भलीप्रकार उपवर्णित हैं।

इस पुस्तक की सभी सनातनधर्मी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा कर रहे हैं।

यद्यपि सनातनधर्मी सज्जन इस पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा कर रहे हैं तथापि कुछ ईर्ष्यालु तथा प्रतिष्ठालोलुप दशनामधारी गुसाईं पन्थ के साधु कहे जाने वालों ने उक्त पुस्तक के विषय में कुछ भ्रम फैला कर 'सूर्यमण्डल को' हस्ततल से आच्छादित करने का दुःसाहस किया है। या यों कहिये--

अतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निपुणा धीः ॥
तिमिरे हि कौशिकानां रूपं प्रतिपद्यते दृष्टिः ॥

वस्तुतः सनातनधर्म पर श्रद्धा न रखने वाले कुछ स्वार्थपरायण प्रच्छन्न कौलगुसाइयोंने अन्तःविद्वेष से प्रेरित होकर और पुस्तक को निमित्त बनाकर हिंदू समाज के साथ अहिन्दू समाज का तथा सनातनधर्मी संप्रदायों का भी विषयान्तर में ध्यान लगा कर सनातनधर्म की मर्यादा को मिटाने के लिये एक षडयंत्र की रचना की है। क्योंकि जब भारतवर्ष में 'संन्यासिसंघ' नामक कोई संस्था ही नहीं है, तब उसके नाम से कोई कार्य करना जनता को धोखा देना ही है। हां! अछूतोद्धारक कुछ दशनामिगुसाइयों का बहुत दिनों से एक गिरोह अवश्य बना हुआ है। परन्तु उसका नाम 'संन्यासिसंघ' नहीं हो सकता। क्योंकि संन्यासी नाम चतुर्थाश्रमी मात्र का है, परन्तु उक्त गिरोह में कुछ दशनामधारियों के अतिरिक्त कोई भी चतुर्थाश्रमी नहीं है। एतावता उक्त गिरोह सनातनधर्मियों में विद्रोह

फैलाने के निमित्त ही बना है। इसी ईर्ष्यालु गिरोह ने श्रौतमुनिचरितामृत के महत्वको अपहरण करने की कुचेष्टा की थी। परन्तु—

हस्त इव भूतिमलिनो यथा यथा लंघयति खलः सुजनम्।
दर्पणमिव तं कुरुते तथा तथा निर्मलच्छायम् ॥

इस युक्ति के अनुसार उक्त पुस्तक का शुभ्र यश प्रतिदिन बढ़ कर भारतवर्ष के कोने २ में सूर्य प्रभा की तरह व्याप्त हो गया।

हमारी आदि से ही यह धारणा थी कि किसी सांप्रदायिक आन्दोलन में विद्यानुरागी शान्तिप्रिय पण्डितवर्ग को अपने (गुसाइयों के) स्वार्थ के लिये किसी प्रकार का कष्ट देना किसी सभ्य मनुष्य का कर्तव्य नहीं है। परन्तु उपद्रवप्रिय गुसाईं महानुभावों ने मिथ्या प्रचार करके पण्डितों की शान्ति भंग कर ही दी। क्योंकि पुस्तक न दिखा कर उसके विरोध में कुछ लिखाना अपने समान अन्यको भी अपयश का पात्र बनाने का प्रयत्न करना है। इसलिये हमें भी पूज्य पण्डितों के समक्ष यथार्थ वस्तुस्थिति का परिचय देना पड़ा। हम नहीं चाहते कि किसी माननीय विद्वान् को किसी प्रकार का अपयश लगे। परन्तु गुसाईं सबको कलंकित करना चाहते हैं। जब माननीय पण्डितों ने श्रौतमुनिचरितामृत नामक पुस्तक पढ़ी तब गुसाइयों के मिथ्याप्रचार के ढोलकी पोल खुल ही गई। इसीलिये प्रतिष्ठित तथा माननीय पण्डितों ने गुसाइयों की प्रेरणा से पुस्तक के विरोध में किये हस्ताक्षरों का प्रतिवाद कर दिया है।

गुसाइयों ने यह भी मिथ्या ही प्रचार किया है कि ग्रन्थकार स्मृतियों को श्रुति मूलक नहीं मानते हैं। परन्तु गुसाइयों की उक्त बात पर किसी को ध्यान नहीं देना चाहिये, क्यों कि ग्रन्थकार स्मृतियों को

श्रुति मूलक मानते हैं। यह बात श्रौतमुनिचरितामृत के उत्तरार्ध में विस्तारपूर्वक लिखी गई है, तथा श्रौत स्मार्त विषय का भी माधवाचार्य के मतके अनुसार विवेचन किया गया है। जिसकी साक्षात् श्रुति उपलब्ध हो उसे श्रौत तथा जिसकी श्रुतिका अनुमान किया जाय उसे स्मार्त कहते हैं, इत्यादि बातों का पुस्तक देखकर निर्णय कर सकते हैं। एतावता पुस्तक में सनातनधर्म पर आक्षेप कहना द्वेष मूलक है। इसी लिये श्रौतमुनिचरितामृत को अच्छी तरह पढ़ने वाले सभी विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से एकस्वर में सनातनधर्म के अनुकूल तथा परमोपयोगी कहा है। अब भी गुसाईं यदि उक्त पुस्तक के विषय में कुछ मिथ्या भ्रम फैलावें तो भारतवर्ष के पण्डितों का अपमान करना ही समझा जायगा।

हां ! गुसाइयों के ग्रंथों में सनातनधर्म को कलंकित करने के लिये अनेक षड्यन्त्र लिखे मिलते हैं। श्रीनारायण के अवतारों को भी मद्यपायी लिख मारा है, सभी महापुरुषों पर गुसाईं पन्थकी छाप लगाकर तथा मद्यमांसादि पीने का अभियोग लगाया है। श्रीशंकराचार्य को भी कलंकित करने के लिये अनेक ग्रन्थों में अनुचित प्रयास किया है। श्रीशंकराचार्यजी को कलंकित करने के लिये इन गुसाइयों ने अनेक ग्रन्थों की भी रचना की है। यह तो जनता को ज्ञात ही है। अब हम पुस्तक के विषय में माननीय विद्वानों की संमति प्रकाशित करते हैं।

भूलसे यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो विद्वान् क्षमा करेगें।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाधत्ते हि सज्जनः॥

स्वामी परमात्मानंद शास्त्री,
मंत्री—उदासीन संघ, काशी।

❀ ॐ ❀

श्रीहरिः

शरारती गुसाइयों की शरारतों पर घृणा।

सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र में एकत्र हुए सर्व-साधु सम्प्रदायों

की

घोषणा।

कुछ दिनों से शरारती गुसाइयों की ओर से किसी डाह, द्वेष तथा स्वार्थवश हो रही शरारत के विरुद्ध, शान्तिप्रिय सर्व सम्प्रदायानुयायी साधु महात्माओं को कैसी घृणा है, इसका परिचय सब सम्प्रदायों के उस सम्मिलित बृहत् जलूस से ही मिल सकता है, जो इस शरारत के विरुद्ध घृणा एवं खेद प्रकाशनार्थ मेला सूर्य्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र में २७-८-३२ को निकाला गया था। इस अपूर्व जलूस में शरारती गुसाइयों के सिवा सब सम्प्रदायों के साधु महात्मा इस बात का प्रदर्शन करने के लिये शामिल हुए थे कि वे शरारतियों की शरारत को न केवल घृणा की दृष्टि से देखते हैं, प्रत्युत् उन पर प्रभाव पड़ रहा है। सर्व साधु सम्प्रदायों का ऐसा सम्मिलित जलूस पहले भी निकला हो, इतिहास में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता। शरारतियों में लज्जा नामक भाव का कुछ भी अंश हो तो उन्हें कुरुक्षेत्र में ही चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये था। पर उन्हों ने अपना मुंह छिपाने के लिये शरारती छोकरों को

आगे खड़ा कर लिया है। जिससे प्रगट होता है कि लज्जित होकर भी वे लोग शरारत को बन्द करना नहीं चाहते।

कुरुक्षेत्र के इस सर्व सम्प्रदाय सम्मिलित जलूस में प्रत्येक सम्प्र दाय के हजारों महात्मा शामिल हुए। सब में बड़ा जोश और उत्साह था। कतिपय प्रतिष्ठित महानुभावों के नाम नीचे लिखे जाते हैं—

श्रीमान् महन्त गोपालदास जी महाराज वैष्णव (वैरागी) लश्करवाला, वृन्दावन।

श्रीमान् महन्त जगदेवदास जी महाराज वैष्णव (वैरागी) गढ़ी।

„ „ शिवरामदास जी महाराज श्रीअवधूत मण्डलाश्रम, हरिद्वार।

„ पण्डित गोपालदास जी निराकारी

„ महन्त धीरमदास जी महाराज निराकारी सन्त मण्डल, हरिद्वार।

„ „ स्वामी कृपाराम जी दादूपन्थी म्युनिसिपलकमिश्नर, भिवानी।

„ स्वामी झुम्मनदास जी महाराज मण्डलेश्वर ग़रीबदासी।

„ महन्त साधुराम जी महाराज ग़रीबदासी मु० दफ़्तू जि० लाहौर।

„ „ आदिराम जी महाराज बड़ा पञ्चायती अखाड़ा।

„ „ दर्शनदास जी महाराज बड़ा पञ्चायती अखाड़ा।

„ „ ईश्वरदास जी महाराज बड़ा पञ्चायती अखाड़ा।

„ „ प्रेमदास जी नया उदासीन पञ्चायती अखाड़ा।

„ „ पं० श्यामदासजी सेक्रेटरी नया उदासीन पञ्चायती अखाड़ा।

,, स्वामी महापुरुष जी महाराज, कोठी श्री स्वामी कमलदास जी
महाराज हरिद्वार, इत्यादि ।

बृहत् जलूल द्वारा घृणाप्रदर्शन के अतिरिक्त शरारतियों की शरारत से सर्वसम्प्रदायों को सावधान करने के लिये प्रतिष्ठित प्रतिनिधि महानुभावों के हस्ताक्षर से एक घोषणा भी प्रकाशित की गई है, जिसे जनता की जानकारी के लिये यहां उद्धृत कर दिया जाता है।

गत प्रयाग कुम्भ पर दशनामी गुसाइयों ने इस भाव के विज्ञापन बांटे थे कि उनमें (गुसाइयों) के सिवा सब साधु सम्प्रदाय अवैदिक हैं। इसके उत्तर में दूसरे सम्प्रदायों की ओर से भी विज्ञापन निकले। उस समय गुसाइयों ने जिस विद्वेषाग्नि को सुलगा दिया था, ईश्वर की दया से वह यथा कथञ्चित शान्त हुई ही थी कि उन लोगों (गुसाइयों) ने एक पुस्तक का बहाना बना कर फिर से साधु सम्प्रदायों में कलहाग्नि भड़काने का काम आरम्भ कर दिया है और अब के सारी शक्ति लगा कर उसे भड़का डालने की दृढ़ प्रतिज्ञा करके निकले हैं। स्वामी पण्डित गङ्गेश्वरानन्द जी उदासीन मण्डलेश्वर ने जनता में सनातनधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये श्रौतमुनिचरितामृत नाम की एक पुस्तक लिखी है। यदि इन गुसाईं भाइयों को उसमें कुछ त्रुटि दिखाई दी थी तो उचित यही था कि ग्रन्थकर्त्ता की सेवा में निवेदन करके संशोधन कराने का यत्न करते या उसके उत्तर में स्वयं कोई पुस्तक लिख लिखा देते जैसी कि सभ्य पुरुषों की मर्यादा सनातन से चली आती है। पर हमें दुःख से कहना पड़ता है कि गुसाईं भाइयों ने ऐसा मार्ग पकड़ा जिसे हम क्या कोई भी समझदार व्यक्ति घृणा की दृष्टि से देखे विना

नहीं रह सकता। इन्हों ने इश्तिहारबाजी की छेड़खानी करके अपने आपको ही नहीं सारे साधु समाज को जनता की दृष्टि में गिराने और साधु सम्प्रदायों में वैमनस्य पैदा करने की चेष्टा की है, जिसकी दिन दिन उन्नति हो रही है। जिससे भविष्य में कोई अनर्थ हो जाने की भी सम्भावना हो रही है। इन सब खराबियों के लिये उत्तरदायी गुसाईं महात्मा ही हैं और होंगे। गुसाईं साधुओं में दूसरे सम्प्रदायों को गिराने और दबाने की आदत दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है। अतः हम इनकी इस कार्रवाई को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और घोषणा करते हैं कि जब तक ये लोग अपनी बुरी आदत को छोड़ नहीं देते तब तक हम न किसी प्रकार इनका साथ देंगे और नाही इनके किसी कार्य में सम्मिलित होंगे।

हस्ताक्षर—

महन्त शिवराम दास श्री १०८ अवधूत मण्डलाश्रम हरिद्वार।

सन्त गोपाल दास पण्डित।

सन्त हंस दास महन्त जौड़ा।

महन्त अमरदेव निराकारी पञ्चायती तीर्थी भवाना।

महन्त नरोत्तमदास जौड़्यांवाले।

तपस्वी बसन्तदास जी निराकारी।

स्वामी प्यारादास जी निराकारी।

महन्त स्वामी कृपाराम जी दादू पन्थी म्युनिसिपल कमिश्नर (भिवानी)।

महन्त धीरमदास जी निराकारी सन्तमण्डल हरिद्वार।

स्वामी फुम्मनदास जी मण्डलेश्वर गरीबदास जी ।

श्री महन्त रामकृष्णदास जी गरीबदास जी छुडानी साहिब जि. रोहतक ।

महन्त साधूराम जी गरीबदासी दफ्तू जिला लाहौर ।

महन्त अमरदास जी गरीबदासी कचयाणा जिला करनाल ।

पण्डित दिगम्बरानन्द जी रामस्नेही ।

महन्त गोपालदास जी वैष्णव लश्कर वाला वृन्दावन ।

महन्त जगदेवदास जी वैष्णव गढ़ी ।

महन्त सन्तराम जी रियासत पटियाला ।

पण्डित कृपारामजी चरनदासी सम्प्रदाय ।

महन्त आदिराम जी महाराज बड़ा पंचायती अखाड़ा

महन्त दर्शन दास जी महाराज बड़ा पञ्चायती अखाड़ा ।

महन्त ईश्वर दास जी महाराज बड़ा उदासीन पञ्चायती अखाड़ा ।

महन्त प्रेमदास जी नया उदासीन पञ्चायती अखाड़ा ।

महन्त पं. श्यामदास जी नया पञ्चायती अखाड़ा ।

महन्त स्वामी महापुरुष जी महाराज, कोठी श्री स्वामी कमलदास जी महाराज हरिद्वार ।

निवेदक—

पण्डित कर्पूरदास वेदान्तकेसरी निराकारी ।

श्रौतमुनिचरितामृत के विषय में प्रसिद्ध पण्डितों की सम्मति

१—श्रौतमुनिचरितामृतविषये सम्प्रदायकलहमालोच्य पूर्वमेव ताटस्थ्ये कृतविचारः परमाग्रहेण मतान्तरे कृतमपि हस्ताक्षरं परावर्त्य सम्प्रति ताटस्थ्यमवलम्बे। पुस्तकमिदं सनातनधर्मानुयायिनां परमोपकृतिमाचरतीति।

श्रौतमुनिचरितामृत के विषय में साम्प्रदायिक कलह को जानकर मेरा तटस्थ रहने का विचार था, परन्तु दशनामी महात्माओं के परमाग्रह से उनकी तरफ (दशनामियों की तरफ) मैंने हस्ताक्षर कर दिया था। अब मैं उन हस्ताक्षरों को लौटाकर तटस्थ होता हूं। और यह पुस्तक सनातनधर्मियों को परमोपकारी है।

श्रीबालबोध मिश्रः

व्याकरण-न्याय-वेदान्ताचार्यः सकलदर्शनतीर्थः

क्विंसकालेज, बनारस।

२—विदित हो कि मैं श्री गङ्गेश्वरानन्द जी को १०-१२ वर्षों से जानता हूँ। वे सनातनधर्मानुयायी हैं। मुझसे और स्वामी जी से पठन पाठनादि का संबन्ध भी था। इस श्रौतमुनिचरितामृत में भी स्वधर्मोत्कर्ष अवश्य है, परन्तु किसी सम्प्रदायपर आक्षेप नहीं। इसलिये मैंने पं० श्री हाराणचन्द्रभट्टाचार्य की वनाई व्यवस्थापर जो हस्ताक्षर किया है उसको वापिस लेता हूँ।

श्री शिवदत्तमिश्र न्यायाचार्यः न्यायशास्त्रप्रधानाध्यापकः
२५। ७।३३ क्विंसकालेज, काशी।

३—पूर्वं मतान्तरे ग्रन्थमनालोक्यैवापाततस्तेषां विचारमनुसृत्य हस्ताक्षराणि कृतानि। अधुना कतिपयदिवसैः श्रौतमुनिचरितामृतमालोच्य तत्र सनातनधर्मोद्देश्यानि प्रधानानि मूर्त्तिपूजा श्राद्धादीनि निरीक्ष्य श्रद्धेयोऽयं ग्रन्थः इत्यवधारितम्। एतद्विषये मतान्तरे कृतलेखं परावृत्यावलम्बिततााटस्थ्येन मया।

मैंने पहिले ग्रन्थ को न देख कर ही दशनामि महात्माओं के विचारानुसार दशनामियों के पक्ष में हस्ताक्षर कर दिया था, परन्तु अब मैंने अच्छी तरह कई दिन तक पुस्तक विचार कर यह निश्चय किया है कि यह पुस्तक सनातनधर्म के मुख्य विषय मूर्त्तिपूजा आदि का प्रतिपादक होने से आस्तिक जनता को श्रद्धेय है। इसलिये पहिले इसके विरुद्ध किये हस्ताक्षरों को लौटाता हुआ मैं तटस्थ होता हूँ॥

ह० श्रीराधाप्रसाद शास्त्री,
प्राच्यविद्याविभागीय धर्मशास्त्रप्रधानाध्यापकः,
हिन्दूविश्वविद्यालय, बनारस।

४—श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थे श्रीशङ्कराचार्यप्रशस्तिः सनातनधर्मसम्मतं मूर्त्तिपूजादिकं च वर्त्तत इति।

श्रौतमुनिचरितामृत में श्रीशंकराचार्यजी की प्रशंसा की गई है। और इस ग्रंथमें सनातनधर्म के आधारभूत मूर्तिपूजादि समस्त विषयों का सम्यक् प्रतिपादन है।

पं० श्री विद्याधर मिश्रः वेद मीमांसाध्यापकः-
प्रिन्सिपल धर्मविज्ञानकालेज, हिन्दूविश्वविद्यालय, बनारस।

५—मया पूर्वं श्रौतमुनिचरितामृतमनालोक्य केवलं कर्णाकर्णिकया तत्र सनातनधर्मश्रीमच्छङ्करभगवत्पादादीनां निन्दादिकमवगत्य यल्लिखितमत्रविषये तदिदानीं ग्रंथमालोच्य विपरीतमिव प्रतिभाति। अत्र खलु सनातनधर्मान्तःपातिनां सर्वेषामेव विषयाणां सम्यक् सन्तोषजनकञ्च प्रतिपादनमस्तीति मया सम्यगालोचितमिति।

मैंने पहिले श्रौतमुनिचरितामृत नहीं देखा था, केवल कर्णपरंपरा से पुस्तक में शंकराचार्यजी की निन्दा का उल्लेख सुनकर दशनामी महात्माओं की तर्फ हस्ताक्षर कर दिये थे। अब ग्रन्थ का पर्यालोचन कर मैंने इस ग्रन्थ को पहिलीधारणा से नितान्त विपरीत पाया, क्यों कि इसमें सनातनधर्म के सभी विषयों का भली प्रकार से वर्णन किया गया है।

श्री केदारनाथ शर्मा शास्त्री साहित्य न्याय प्रधानाध्यापकः-
हिन्दूकालेज, बनारस।

६—स्वामी गङ्गेश्वरानन्द विरचित सनातनधर्म सम्मत श्रौत-मुनिचरितामृत ग्रन्थ मूर्त्तिपूजादि का सम्यक् प्रतिपादक है।

सर्वतंत्र स्वतंत्र व्याकरणाद्याचार्य पं० हरिनारायण त्रिपाठी,
प्रोफेसर गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, बनारस।

७—अत्रार्थेसम्मतिः—

श्रीभास्करानन्द शर्मणो व्याकरणाचार्यस्य

उक्तार्थ में मेरी भी सम्मति है।

अध्यापक मारवाड़ी संस्कृत कालेज, बनारस।

८—सम्मनुतेऽमुंलेखम्—

उक्त लेख का मैं भी अनुमोदन करता हूं।

श्रीपलदेव मिश्रजी व्याकरणाचार्य,
विश्वनाथ संस्कृत पाठशाला, प्रधानाध्यापक–काशी।

९—अनुमोदन्ते ग्रन्थविषयिणीं सुव्यवस्थाम्

ग्रन्थ विषयक सुव्यवस्था का अनुमोदन करते हैं।

श्रीरामानुजसिद्धान्तप्रवर्त्तकाचार्य, व्याकरणाचार्य
श्रीनृसिंहाचार्य त्रिपाठी,
माध्वदर्शनाध्यापकः–क्विंसकालेज-बनारस।

१०—८९ पृष्ठ में इस ग्रन्थ में शङ्कराचार्य की प्रशंसा की गई है, एवम् कुमारिलभट्ट प्रभृति की भी प्रशंसा है, मूर्त्तिपूजादिका भी प्रतिपादन अच्छा है।

नारायणदत्त त्रिपाठी, व्याकरणाचार्य, पोस्टाचार्य
मारवाड़ी संस्कृत कालेज, श्रीचन्द्रमहाविद्यालय प्रधानाध्यापकः—

११—श्रौतमुनिचरितामृत नाम का ग्रन्थ अद्वैतमत का समर्थन करते हुए मूर्त्तिपूजा का भी समर्थक है।

दीनानाथ शास्त्री व्याकरणाचार्य
प्रोफेसर श्रीचन्द्रमहाविद्यालय, आसभैरव, काशी।

१२—श्री गणेशदत्त ज्यौतिषी ज्यौतिषाचार्य
श्रीचंद्रमहाविद्यालय ज्यौतिषाध्यापकः—

१३—मुकुन्दशास्त्री खिस्ते, साहित्याचार्य
श्रीचंद्रमहाविद्यालयाध्यापकः—

१४—उदासीनसम्प्रदायानुयायि श्रीमदुदासीन स्वामि गङ्गेश्वरानन्द विरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं श्राद्ध मूर्त्तिपूजादि सनातनधर्मसिद्धान्तपरिपोषकत्त्वेनातीवसनातनधर्मिणांसन्तोषदमिति मन्यते।

उदासीन संप्रदायावलम्बी श्रीमान् स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी के बनाये श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ में श्राद्ध तथा मूर्तिपूजादि सनातनधर्म के श्रद्धेय विषयों का सम्यक् उल्लेख होने से यह पुस्तक सनातनधर्मियों को अत्यन्त संतोषजनक है।

राजनारायण त्रिपाठी
व्याकरण पोष्टाचार्यः साहित्याचार्यः।
उदासीन गुरुसंगतविद्यालय प्रधानाध्यापकः—

१५—श्रीमत् स्वामि गङ्गेश्वरानन्दनिर्मितं श्रौतमुनिचरितामृतममृतमयमवलोक्य नितरामेव ममानन्दः समजनि। यदस्मिन् सनातनधर्मप्रधानाचार्य श्रीमद्भगवच्छङ्करस्वामिनां प्रशंसामयं यथा-

वस्थितवस्तुप्रकाशकं चरितं वैदिकमंत्रादिना युक्त्युपष्टम्भेन मूर्त्ति-पूजाऽवतारश्राद्धादिकं सनातनधर्मप्रधानाङ्गं व्यवस्थापितम् । अन्य-दपि महानुभावचरितं चकास्ति, मन्ये धर्मजिज्ञासून् वहूनुपकरिष्यति-निबन्धोयमिति ।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी के बनाये हुए अमृतमय श्रौतमुनि-चरितामृत ग्रन्थ को देख कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि इसमें सनातनधर्म के प्रधान श्रीशंकराचार्यजी की स्तुति की गई है, और श्राद्ध, मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि का वैदिक मन्त्रों तथा प्रबल प्रमाणों द्वारा अच्छीतरह प्रतिपादन किया है । और अन्य महापुरुषों का जीवनचरित्र भी इतिहासानुकूल वर्णित है, मैं आशा करता हूं कि धर्मजिज्ञासुओं का इस से विशेष उपकार होगा ।

लक्ष्मीनाथ झा वेदान्ताध्यापकः-
विश्वविद्यालयः काशी ।

१६—सादरमनुमनुतेलेखमसुम्

ऊपर लिखी व्यवस्था को हम भी सादर स्वीकार करते हैं ।

उग्रानन्द झा शर्मा तर्कद्वय व्याकरणतीर्थः, तर्कभूषणः,
स्याद्वाद महाविद्यालय प्रधानाध्यापकः
उदासीन सं० पाठशालाध्यापकश्च काशी २४—७—३२

१७—श्रीव्रजविहारी झा शर्मा
व्या० ती० न्या० भू०

१८—श्री गेनालालचौधरी ज्यौ० आ० प्रधानाध्यापक
टीकमणि संस्कृतकालेज, काशी ।

१९—श्री मुरलीधरठक्कुरः, ज्यौतिषाचार्यः काशी ।

२०—श्रीमदुदासीनमण्डलेश्वर स्वामि गङ्गेश्वरानन्द श्रौतमुनि-विरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणादि धर्मशास्त्रा-नुमोदित मूर्त्तिपूजनावतारवादश्राद्धविवेकादिधार्मिकार्थप्रतिपादकमिति सनातनधर्मजिज्ञासूनां धार्मिकजनानामशेषसंशयोच्छेदकतया परमो-पकारकमिति सानन्दं विज्ञापयामः ।

उदासीन मण्डलेश्वर श्रीमान् पं० गङ्गेश्वरानन्दश्रौतमुनिजी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि से प्रतिपादित तथा अनुमोदित, सनातनधर्म के मुख्य विषय श्राद्ध, मूर्ति-पूजा, अवतारवाद आदि का नितान्त प्रतिपादक होने से सनातनधर्म के गुढ विषयों के जिज्ञासुधार्मिकसज्जनों के लिये यह ग्रन्थ अति उपकारक है ।

श्रीमधुसूदनभट्टाचार्याः तर्क व्याकरण तीर्थाः,
उदासीनगुरु संगतविद्यालय न्यायशास्त्राध्यापकाः, काशी ।

२१—श्रौतमुनिचरितामृतंनामपुस्तकमतीवरमणीयंदृश्यते, त-स्मिन् श्रौतमुनिचरितामृते मूर्त्तिपूजाऽवतारवादश्राद्धवादादीनां नितरां सप्रमाणमुपवर्णनम् , अतः सनातनधर्मानुयायिभिः सर्वैः सहृदयै-र्ग्राह्यम् । अत एव मयाऽपि सम्यक् स्वसम्मतं मतं प्रतिपादितम् ।

सनातनधर्म के मूर्तिपूजा, श्राद्ध, अवतारवाद आदि मुख्य तथा श्रद्धेय सिद्धान्तों के सम्यक् प्रतिपादक होने से यह श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ अत्यन्त प्रशंसनीय है । अतः सनातनधर्मीसज्जनों को इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठाना चाहिये ।

कवि मङ्गलदत्त उपाध्यायः काव्य व्याकरण तीर्थः
लालेश्वरवेदविद्यालय ब्रह्मघाट काशी ।

२२—श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तकावलोकनेन तत्र बहुशः सनातनधर्मीया एव विषयाः प्रतिपादिता इति ।

श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ के पढ़ने से प्रतीत होता है कि इसमें सनातनधर्मी सभी विषयों का ग्रन्थ कर्त्ताने प्रतिपादन किया है ।

श्रीरामयत्न ओझा ज्यौतिषाचार्यः
हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी ।

२३—स्वामी श्री गंगेश्वरानन्द विरचित श्रौतमुनिचरितामृत नाम की पुस्तक में श्राद्ध, मूर्त्तिपूजादि, अधिकांश सिद्धान्तों का युक्तिपूर्वक प्रतिपादन अच्छी तरह किया गया है ।

श्रीराम व्यास ज्यौतिषी,
११—९—३३ हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी ।

२४—श्रौतमुनिचरितामृतनामकोऽयं ग्रंथः सनातनधर्मानुकूल इति प्रमाणी करोति ।

यह श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्म के सर्वथा अनुकूल है, यह मैं प्रमाणित करता हूं ।

झोपाभिधो यागेश्वर शर्मा
मुमुक्षुभवन वेदवेदांगविद्यालयाध्यापकः
११—९—३३ भदैनी-काशीस्थः ।

२५—श्रीस्वामिगङ्गेश्वरानन्दनिर्मितं श्रौतमुनिचरितामृतं श्राद्ध-प्रतिमापूजाऽवतारादि प्रतिपादयत् सनातनधर्मनिरूपणपरम् इति प्रतिभाति ।

स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दजी निर्मित श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्म के प्रधानविषय श्राद्ध, प्रतिमापूजनादि का सम्यक् प्रतिपादक है।

श्रीरामप्रीति शर्मा द्विवेदी व्याकरणाचार्यः
काशीस्थ श्रीदाऊजी पाठशाला,
प्रधानाध्यापकः।

२६—श्रीमत्स्वामि विरचितोऽयं ग्रन्थः श्रुत्यादिप्रमाणीकृतः क्वापि न विरुद्धोऽतः सनातनधर्मानुयायिनामस्माकं सर्वथोपादेय इति संमन्यते।

श्री मत् स्वामी (गंगेश्वरानंदजी) का बनाया हुआ यह ग्रन्थ श्रुत्यादि से प्रमाणित है, और इस ग्रंथ में कहीं भी विरुद्ध नहीं है। इस लिये हम सनातनधर्मावलम्बियों को यह ग्रंथ सर्व प्रकार से उपादेय है।

काशीस्थ प्राचीन धर्मशास्त्राध्यापक पंचागकारकः
श्रीजयकृष्ण विद्यासागरः काशी।

२७—श्रीमत्स्वामि गङ्गेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं मयाऽवालोकि, पुस्तकेऽस्मिन् श्रुत्यादिप्रमाणसिद्धं मूर्तिपूजनादिकं सयुक्तिकं प्रतिपादितमिति सनातनधर्मानुकूलमिदमिति प्रमाणीकरोति

मैंने श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी निर्मित श्रौतमुनिचरितामृत (ग्रन्थ) पढा है। इस पुस्तक में श्रुत्यादि प्रमाणों से सिद्ध मूर्तिपूजनादि का युक्तियों के साथ प्रतिपादन किया गया है। इस लिये यह ग्रंथ सनातनधर्म के अनुकूल है।

कमलकृष्ण स्मृतितीर्थः काशी।

२८—श्रीमत्स्वामि गङ्गेश्वरानन्द विरचितं श्रौतमुनिचरितामृत-मवलोकयता मया विदितमेतद् यदस्मिन् पुस्तके सनातनधर्म विरुद्धार्थप्रतिपादकतया कोऽपि शब्दो न विराजत इति प्रमाणयति।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्द जी विरचित श्रौतमुनिचरितामृत को पढ़कर मैंने यह निश्चय किया है कि इस पुस्तक में सनातन धर्म से विरुद्ध अर्थ को कहने वाला एक भी शब्द नहीं है

श्रीश्रीशङ्करदेव शर्मा, तर्करत्न, काशी।

२९—श्रीमत्स्वामिगङ्गेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं मया अवलोकितं नात्र सनातनधर्मविरुद्धार्थो लभ्यते।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्द जी प्रतिपादित श्रौतमुनिचरितामृत मैंने पढ़ा है। इस पुस्तक में सनातनधर्म के विरुद्ध कुछ नहीं प्रतीत होता है।

श्रीमत्काशीनरेश सभापण्डित
श्यामाकान्त, तर्कपञ्चानन, काशी।

३०—श्रीमत्स्वामिगङ्गेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं मया अवलोकितमिदम् सर्वमेवात्र निहितवृत्तं श्रुति स्मृति पुराण प्रमाणसिद्धं न विरुद्धं कुत्रापि धर्मशास्त्राणां नितरामिदं सनातन-धर्मानुकूल मितिप्रमाणयति।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी संपादित श्रौतमुनिचरितामृत मैंने पढ़ा है। इस पुस्तक में सभी वृत्त श्रुति स्मृति और पुराणादि प्रमाणों से सिद्ध है, तथा धर्मशास्त्र के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। अतः यह ग्रन्थ नितान्त सनातनधर्म के अनुकूल है॥

श्रीभारतधर्ममहामण्डलीयोपदेशक विद्यालये श्रुति स्मृति
शास्त्राध्यापकः स्मृति तीर्थोपनामकः
श्रीशशिभूषण शर्मा, काशी।

३१—श्रीश्रौतमुनिचरितामृतं श्रीस्वामिगंगेश्वरानन्दसम्पादितं समवलोकितं मया। ग्रंथस्यास्य विलोडनेन स्फुटतरम्प्रतिभाति यन्नाऽयं कथञ्चिदपि प्रतिपक्ष्याद्दिप्तलोहगन्धितामावहति प्रतिफलति वा तत्समुद्घोषितानाक्षेपान्। तस्मादकलोऽयं कलकलोऽकाण्डताण्डवमात्रमेवेति मन्यते।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्द जी सम्पादित श्रौतमुनिचरितामृत मैंने पढ़ा है। इस ग्रंथ को विलोकन करने से स्पष्ट मालूम होता है कि इस ग्रंथ में किसी प्रकारभी, प्रतिपक्षियों (दशनामियों) से लगाये कलंक की गंध सिद्ध नहीं होती। इस लिए यह (विपक्षियों का) कोलाहल सर्व प्रकार से निराधार है। तथा अकाण्डताण्डव मात्र है।

श्रीवीरमणिप्रसाद उपाध्याय,
साहित्याचार्यो न्यायशास्त्री, एम० ए०, काशी।

३२—पं० स्वामि श्रीमद्गंगेश्वरानन्दविरचितः श्रौतमुनिचरितामृतनामको ग्रन्थः सनातनधर्माविरुद्ध इति प्रमाणयति—

पं० श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी कृत यह श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रंथ सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं है।

पं० सदाशिवशास्त्री, दाक्षिणात्य,
साहित्योपाध्यायो, व्याकरणशास्त्री, काशी।

३३—मैंने श्रौतमुनि चरितामृत ग्रन्थ को पहिले नहीं देखा था, परन्तु प्रामाणिक पण्डितों के लेख से विदित हुआ कि उसग्रन्थ में दशनामी संप्रदाय को अवैदिक और स्वसंप्रदाय को वैदिक कहा गया है। और

इसपर अनुचित आक्षेप किया गया है । इसलिये मैंने कुछदिन पहिले इसके विरोधमें हस्ताक्षर किया था, क्योंकि दोनों संप्रदायोंपर मेरी श्रद्धा है। ऐसे विकट समय पर इन संप्रदायों में परस्पर वैमनस्य उत्पन्न हो यह मैं नहीं चाहता । संप्रति मैंने उस ग्रन्थ को देखा, ग्रन्थ में वहुत विषय है, जो कि सनातनधर्म के ही अनुकूल है। मैं यह अवश्य कह सकता हूं कि यह ग्रन्थ सनातनधर्मका विरोधो नहीं है । ॥ इति ॥

ताराचरण भट्टाचार्य,

साहित्याचार्य सकलदर्शनाध्यापकः टीकमणि कालेज, काशी ।

३४–श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थे श्री १०८ श्रीशङ्कराचार्यस्यातीव-प्रशंसाऽस्ति, लेशतोऽपिनास्ति सनातनधर्मनिन्दाऽस्मिन् ग्रन्थ इति।

श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथमें श्री १०८ भगवत्पाद श्रीशंकराचार्यजी की अत्यन्त प्रशंसा की है और इस पुस्तक में सनातनधर्म की निन्दा लेशमात्र भी नहीं है ।

रामप्रियपाठकः साहित्याचार्यः

बनारस ।

३५—श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थे श्रीमच्छङ्करभगवत् पादादीनां प्रशस्तिः सनातनधर्मसम्मतं मूर्त्तिपूजाश्राद्धादिकं च वर्त्तत एवेति ।

श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ में भगवत्पाद श्रीशंकराचार्य आदि आचार्य चरणों की पर्याप्त प्रशंसा के साथ २ सनातनधर्म के मूर्तिपूजा श्राद्धादि सभी विषयों का सम्यक् वर्णन है ।

भगवत् प्रसाद शर्मा मिश्रः काशी ।

६ । ९ । ३३ ।

३६—श्रौतमुनिचरितामृतं वर्षतीव श्रौतमुनिविरचितोऽयं श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थः। ग्रन्थेऽस्मिन् साधु विभान्ति मूर्त्तिपूजा-श्राद्धावतारवादादयः सनातनपद्धतय। इति

श्रौतमुनि विरचित यह श्रौतमुनि चरितामृत नामक ग्रन्थ मानो श्रौतमुनियों के चरितों की वर्षा कर रहा है। इस ग्रन्थ में मूर्तिपूजा श्राद्ध तथा अवतार आदि सनातनधर्म की पद्धति का अच्छा प्रतिपादन है।

कैलाशपति मिश्रः—व्याकरणाचार्य,
अध्यापक क्विन्सइण्टरकालेज, बनारस।

३७—श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थोऽयमार्षप्रतिपादित मूर्त्तिपूजा-श्राद्धप्रभृतिनियमानां सम्यक्प्रतिपादक इति प्रमाणीकरोति—

इस श्रौतमुनिचरितामृतनामक ग्रन्थ में आर्षप्रतिपादित मूर्त्तिपूजा तथा श्राद्ध प्रभृति नियमों का भली प्रकार प्रतिपादन है।

पं० श्रीरामचन्द्रमिश्रः—
व्याकरणपोष्टाचार्यः, सांख्ययोगशास्त्री, बनारस।

३८—श्रीश्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थोऽयंमार्षप्रतिपादितश्राद्धादि प्रतिपादक इति साल्हादं प्रमाणीकरोति।

यह श्रौतमुनिचरितामृतं ग्रन्थ आर्ष प्रतिपादित श्राद्धादि का प्रतिपादक है, यह बात हम सहर्ष प्रमाणित करते हैं।

शिवमंगलद्विवेदी
व्याकरण साहित्य सांख्यतीर्थो न्यायाचार्यः
अध्यापक मारवाड़ी संस्कृत कालेज, मीरघाट, काशी।

३९—श्रीश्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थोऽयं सम्मनुते परमपूज्यार्षप्रतिपादित प्रतिमार्चनादिक सद्विधीनिति प्रमाणीकरोति ।

यह श्रौतमुनिचरितामृत परमपूज्य आर्ष प्रतिपादित मूर्त्तिपूजादि सनातनधर्म की विधियों का प्रतिपादन करता है ।

ह० श्रीपं० नित्यानन्द मिश्रः वेदाध्यापकः,
श्रीसत्यनारायण वेद संस्कृत विद्यालय, काशी ।

४०—श्रीमत्स्वामि गंगेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतमवलोक्य सहर्षं विज्ञापयामि यत् पुस्तकमिदं मूर्त्तिपूजनादिक धार्मिकार्थप्रतिपादकतया सनातनधर्मानुकूलमिति ।

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्द जी सम्पादित श्रौतमुनिचरितामृत को देख कर हम हर्ष के साथ कहते हैं कि यह पुस्तक मूर्त्तिपूजनादि धार्मिक विषयों का प्रतिपादक और सनातनधर्म के अनुकूल है ।

वंगीय दलपति पण्डितप्रवर विद्यारत्नोपाधिक
श्रीमधुसूदनदेव शर्मा, बनारस ।

४१—विदितं भवेत् सज्जनानां, येऽनधिगम्य प्रकरणार्थं पौर्वापर्येणानालोच्यैव निर्दोषं सदोषंवदंतस्ते किं कुर्वन्ति, यथा प्रचंडमार्तण्डमण्डले पेचका अंधंतमः कल्पयन्ति तथा तेषां दोषोद्भावनं वेदितव्यम्, तथाहि संक्षेपशारीरके "महा महिम्नामपि यश्चिकीर्षति स्वभावसंशुद्धतरंतिरोयशः ।

स नूनमाच्छादयितुं प्रवर्त्तते विवस्वतो हस्ततलेनमं डलम्। यथा वा तत्रैव समारम्भे—"पुरुषापराधमलिनां धिषणां निरवद्य चक्षु-

रुद्योऽपि यथा न फलाय भवति भच्छुंविषयाकृतिसंभवापितथा-ऽस्मनि धीः" अयं हि वेदवेदाङ्गकणभक्षाक्षपादपक्षीयतर्कजाल-मधिगम्य कर्मकाण्डादिविषयेषु निष्णातबुद्धिः तदीय कथनीयले-शानभिज्ञा अकाण्डताण्डवं चिकीर्षवोऽनभ्यासशीला गर्त्ते पतन्ति यथा तथैरते मंदा महानुभावस्य विद्वद्वरिष्ठस्य लोकोत्तरगुण-गरीयस्य गंभीरभावस्य तत्त्वानभिज्ञास्ते ब्रुवन्तो न लज्जन्ते, इति हा कष्टम् ! येऽन्यत्र पक्षपाताद्दत्तदृष्टयो महानुभावा पण्डितप्रवर श्री गंगेश्वरानंदीय संगृहीत श्रौतमुनिचरितामृतं सम्यक् समालोचनेन विदाङ्कुर्वन्तु, यदेतत् प्रकरणे विष्वजनीने आत्मनीनं मन्यमाना मन्दा दोषारोपं चिकीर्षवः स्वयंनष्टा भविष्यन्ति, इतिमन्महे । तथा च—

त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।

अत्युग्रपापपुण्यानामिहैवफलमश्नुते । नहि पुस्तकमिदं सना-तनधर्मविरुद्धं कथमपि, प्रत्युत सनातनधर्मोपकारकमिति प्रमाणी करोति—

सर्वतंत्रस्वतंत्र-निखिलशास्त्रनिष्णात-यतिप्रवरः
श्री बालानन्द स्वामी
बनारस ।

४२—श्रौतमुनिचरितामृतपुस्तके बहुशः सनातन धर्मस्यैव विषयाः सम्यगालोचिताः सन्ति-इति प्रमाणीकरोति ।

- विन्ध्येश्वरी प्रसाद शास्त्री
प्रधान धर्माध्यापकः सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल काशी ।

४३—श्रीमद् गङ्गेश्वरानन्द श्रौतमुनिविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं सनातनीयो मूलवेदनिर्धारितामत्युपयोगिनीं तात्विकीं व्यवस्थामुपस्थापयते प्रतिपादयते च सनातनधर्मसूक्ष्मविषयाणां श्राद्धमूर्तिपूजादि विधानानां याथातथ्यमादरणीयमिति सम्मनुते।

स्वामी गंगेश्वरानन्द श्रौतमुनिप्रणीत श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ मूलशास्त्र वेदादिद्वारा प्रदर्शित सनातनधर्म की यथार्थ व्यवस्था का परिचय देता है। साथ ही सनातनधर्म के मुख्य विषय प्रतिमापूजन अवतारवाद, श्राद्धादिका यथार्थ प्रतिपादक है, अतः सनातनधर्मानुयायी प्रत्येक सज्जन को यह ग्रन्थ आदरणीय है।

विविध दर्शन निष्णात श्रीसिद्धनाथ,

व्याकरणपोष्टाचार्य।

४४—श्रीमत् स्वामि गङ्गेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं मयावलोकितमस्मिन् पुस्तके सनातनधर्मशास्त्रानुमोदित मूर्त्तिपूजादिकं सम्यक् प्रतिपादितमिति सनातनधर्मानुकूलमिति प्रमाणी करोति।

श्रीमान् स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी द्वारा विरचित श्रौतमुनिचरितामृत को हमने देखा, इस पुस्तकमें सनातनधर्म के धर्मशास्त्रों से भी अनुमोदित मूर्तिपूजादिक विषयों का अच्छे तरीके से प्रतिपादन है, इसलिये सनातनधर्म के अनुकूल है, ऐसा प्रमाणित करता हूं।

मुक्तामाच्छा पुरोहित विद्यावागीशोपनामक,

श्रीशारदाचरणदेव शर्मा काशी।

४५—श्रौतमुनिचरितामृतं पर्यालोचयता मया कथमपि सनातनधर्मद्वेषलेशोऽपि नासादितः । ये तु तथाभ्यूहन्ति ते ग्रन्थादर्शनाद् विकारान्तरसमुद्रेकाद्वेति मे मतम् ।

श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ को मैंने आद्योपान्त देखा, इसमें किसी प्रकारसे सनातनधर्मके विरुद्ध लेशमात्रभी नहीं है, जो लोग सनातनधर्म के विरुद्ध कहते हैं सो या तो ग्रन्थको सर्वथा देखते ही नहीं या किसी खास द्वेष विशेष से कहते हैं, यह मेरा मत है।

श्रीकेशवप्रसाद मिश्र,
काशी विश्वविद्यालयाध्यापकः
ता० १५।९।३३.

४६—श्रौतमुनिचरितामृतं श्रीमदुदासीनगङ्गेश्वरानन्दप्रणीतं सनातनधर्माविरुद्धमिति प्रमाणयति ।

श्रीमान् गंगेश्वरानंदजी उदासीनप्रणीत श्रौतमुनिचरितामृतग्रंथ सनातनधर्मानुकूल है ।

श्रेष्ठिप्रवर श्रीशिवप्रसादगुप्तस्य प्रधान पण्डितः,
श्रीराजाराम शास्त्री ।

४७—श्रौतमुनिचरितामृतं श्रीमदुदासीनगङ्गेश्वरानन्दप्रणीतं सप्रमाणेन सनातनधर्माविरुद्धमिति प्रमाणयति ।

श्रीमान् गंगेश्वरानंद उदासीनप्रणीत श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्मानुकूल है ।

पं० रामानन्द पाण्डेय व्याकरणाचार्य,
संस्कृत पाठशाला नगवा काशी ।

४८—ग्रन्थोऽयम्मयालोचितः, नाऽस्त्यत्र सनातनधर्मानुयायिनां कश्चिद्विरोधः, तेन कृतमपि हस्ताक्षरं परावर्त्य सम्प्रति ताटस्थ्येन भाव्यमिति—

यह ग्रन्थ मैंने आद्योपान्त पढा, इसमें सनातनधर्मियों के लिये कोई विरोध की जगह नहीं है, इस लिये दशनामि महात्माओं की व्यवस्था•पर किये हस्ताक्षरों को लौटा कर मैं तटस्थ होता हूं।

रामदेव शर्मा द्विवेदी,
विश्वविद्यालयीय र० सं० विद्यालयाध्यापकः।

४९—चराचरात्मकेऽस्मिन् संसारे खलु श्रीसनातनधर्मतत्पराणामखिलखलदुर्दान्तहृदयविदारकाणां महामहोपदेशकानामपि बहूपकरिष्यन्नयं श्रीस्वामिगंगेश्वरानन्दविरचितोग्रन्थः श्रौतमुनिचरितामृतनामा ममाऽपि हृदयमाल्हादयति यतः प्रतिवादिजनानां मुखभंगकरणाय विष्णोरवतारवादान् मूर्त्तिपूजाश्राद्धादीन् निखिलविषयान् श्रुतिस्मृतिपुराणैः सम्यक् प्रतिपादयति ग्रन्थोऽयमिति प्रमाणीकरोति।

स्थावर जंगमात्मक संसार में सनातनधर्म विरोधिदल के दांत खट्टे कर देने वाले स्वधर्मपरायण महामहोपदेशकोंका सर्वतोभावेन उपकार करता हुआ यह श्रौतमुनिचरितामृतग्रंथ मेरे मनकोभी अत्याह्लादित करता है, क्योंकि यह ग्रन्थ मूर्तिपूजा, श्राद्ध, अवतारवाद, आदि सनातन धर्मिविषयों का वेदादिसच्छास्त्रों से प्रतिपादन करता हुआ विपक्षियों को गहरीमार देता है।

K. T. C. I. E. इति लब्ध पदवीक,
राजा मोतीचन्दजी महानुभावस्य राजपुरोहित,
पं० द्वारिकानाथ त्रिवेदी।

५०—श्रीमद्गंगेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं सम्यगवलोकितं मया, पुस्तकमिदं सनातनधर्मरहस्यप्रतिपादकं वर्त्तते, नेदं सनातनधर्मविरुद्धमिति प्रमाणयति।

श्रीमान् गङ्गेश्वरानन्द जी द्वारा बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ मैंने अच्छी तरह से देखा, यह पुस्तक सनातनधर्म के रहस्यों का प्रतिपादन करता है और सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं है।

पं० बलदेव मिश्रः

गायत्रीमहामण्डल संस्कृतविद्यालय यजुर्वेदप्रधानाध्यापक, काशी।

५१—श्रीमन्माननीयानां विपश्चिद्विपश्चितामुदासीनवर्याणां गंगेश्वरानन्दमहोदयानाम् श्रौतमुनिचरितामृतमन्वर्थमतमवगाहते। यद्यपि स्वमतस्य मतान्तरापेक्षयोत्कर्षबोधनाय मतान्तरखण्डनमपि लेशतोजाजागर्ति—तथापि 'यत्परः शब्दः स शब्दार्थः, इति न्यायेन न तत्तात्पर्यविषयीभूतमितिसनातनधर्मानुयायिभिर्विद्वद्भिश्चोपयोगितया ग्राह्यमिति संमनुते।

अर्थ—श्रीमान् परममाननीय स्वामी गंगेश्वरानन्दजी संकलित श्रौतमुनिचरितामृत की वास्तव में अन्वर्थ संज्ञा है, यद्यपि अन्य मतों की अपेक्षा से अपने मतका अधिक उत्कर्ष लिखा है, इस लिये 'जिस भाव के लिये शब्दों का प्रयोग किया जाता है वही शब्दोंका वास्तविक अर्थ है, इस न्याय से यह पुस्तक सनातनधर्मानुयायियों को ग्राह्य है।

पं० चन्द्रशेखर मिश्रः।

व्याकरणाचार्यः प्रधानाध्यापक खेतान विद्यालय काशी।

५२—अत्रार्थे संमतिः । बालकृष्ण शास्त्री व्या० आ०
खेतानविद्यालय-काशी ।

५३—अयं श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थो मूर्त्तिपूजा श्राद्धादि प्रतिपादकत्वेन सनातनधर्मानुगः इति ।

बालेश्वर उपाध्याय व्याकरणाचार्यः
प्रधानाध्यापक भगवानदास
डालूराम सं० पा० काशी ।

५४—श्रौतमुनिचरितामृतनाम के ग्रन्थ के विषय में मैंने आपाततः हस्ताक्षर कर दिये थे, वास्तव में देखने से यह ग्रन्थ सनातनधर्म के विषयों से परिपूर्ण तथा सनातनधर्मोपयोगी है ।

श्रीबलदेव ज्यौतिषी
हिन्दूविश्वविद्यालय काशी ।

५५—श्रीमदुदासीनवर्य स्वामी रामानन्द भगवत्पाद शिष्य वेददर्शनाचार्य श्रीगङ्गेश्वरानन्दश्रौतमुनिविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतनामकं पुस्तकं सर्वथा सनातनधर्माविरुद्धं मूर्त्तिपूजादि समर्थकमिति प्रमाणयति ।

श्रीमान् उदासीनवर्य स्वामी रामानन्दमहाराज के शिष्य वेद दर्शनाचार्य श्रीगङ्गेश्वरानन्द श्रौतमुनि द्वारा बनाया हुवा श्रौतमुनिचरितामृत नामका पुस्तक किसी प्रकार भी सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं है, किन्तु मूर्तिपूजादि का समर्थक है, यह प्रमाणित करता हूँ ।

महामहोपाध्याय पं० श्री अयोध्यानाथ शर्मा जी के
सुपुत्र रघुनाथ शर्मा ज्यौतिषाचार्य
प्रमोदपाठशाला, नईबस्ती, काशी ।

५६—विहिताखिलसनातनधर्मप्रतिपादनेनायं श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थोऽस्माकं सुष्ठु प्रतिभाति समवलोकनेन ।

अर्थ–इस श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ में सनातनधर्म के सभी विषयों का भलीभांति प्रतिपादन है, इसलिये हमें यह मनोहारी प्रतीत होता है ।

महादेवोपाध्यायः, साहित्याचार्यः,
नित्यानंदवेदविद्यालय साहित्याध्यापकः, काशी ।

५७—श्रौतमुनिचरितामृतनामकोऽयं ग्रन्थ उदासीनधर्ममहत्त्व प्रतिपादनैकप्रयोजनो, नैवाऽऽर्यसमाजधर्मप्रतिपादकतां प्रकटयत्यात्मनः ।अत्र ग्रन्थे यत्र तत्राऽऽर्यसमाजविरुद्धमूर्तिपूजादिप्रतिपादन दर्शनेन सम्भावये नात्रार्यसमाजधर्मगन्धःस्यादिति ।

यद्यपि श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ उदासीनधर्म के महत्व का प्रतिपादक है । परन्तु आर्यसमाज के धर्मों का प्रतिपादक नहीं है क्योंकि इस ग्रन्थ में स्थल २ पर आर्यसमाज के विरुद्ध मूर्त्तिपूजादि प्रतिपादित हैं । इस लिये इस पुस्तक में आर्यसमाज के धर्म की गन्ध किस प्रकार हो सकती है

ललिताप्रसाद डबराल
आश्विन वदी १२ शी० १९९० वि० सं०
१६ सितम्बर १९३३ जगतगंज बनारस

५८—दर्शनाम्बुधिसमुद्गततत्त्वज्ञानज्ञानामृताक्षालितान्तःकरण प्रतिफलितब्रह्ममूर्त्तिमण्डलेश्वरविद्वद्वरस्वामि श्री गङ्गेश्वरानन्द श्रौतमुनिविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं सनातनधर्मप्रतिपादकशब्द-सितासम्मिश्रितं वारम्वारमजस्रमनुभूयमानं सितामिश्रितक्षीर-मिवास्वाद्यमानं प्रसादयति चिरं ममान्तःकरणम् । विषया-

ऋात्रत्या न केऽपि सनातनधर्मविरोधिनः । अपि तु सनातनधर्मप्रमाणमूर्धन्यग्रन्थगृहीततया नितरां प्रमाणतामासादयति । किमतः परं कमनीयं स्यात् पामराणामपि चेतश्चमत्करोति चमत्कृतोपदेशाच्चरेण धार्मिकग्रन्थानवलोकनेन बहुत्र विषये संदेहकवलितान्तःकरणानपि सन्देहनिवृत्या तत्त्वनिर्णयद्वारा सनातनधर्मे व्यवस्थापयतीत्यत्र समोदमातनुते ।

दर्शनशास्त्र की अतिगूढ फिलास्फी के मार्मिक ज्ञाता श्री मंडलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्दजी श्रौतमुनि ने दार्शनिक वैदुष्यसूचक श्रौतमुनिचरितामृत नाम का ग्रंथरत्न बनाया है । जो श्रौतमुनिचरितामृत सनातनधर्म के प्रतिपादकशब्दरूपी मिश्री से युक्त हो और अधिक हृदयग्राही हो गया है । वारम्वार शुरू से आखीर तक विचारने पर सितामिश्रित पवित्र गो दुग्ध की तरह मानसिक विकृति को शान्त करता हुआ यह ग्रंथ मेरे मन को आह्लादित कर रहा है । इसमें सनातनधर्म विरुद्ध कोई विषय नहीं, प्रत्युत सनातनधर्म सम्मान्य वेदादि के प्रमाणों द्वारा अच्छी तरह गुम्फित है । इससे अधिक हर्ष की बात क्या हो सकती है कि यह ग्रंथ चमत्कार विशिष्ट उपदेशप्रद शब्द-विन्यास द्वारा पामरों के चित्त को भी चमत्कृत कर देता है, साथही धार्मिक ग्रंथों के न देखने से उठ रहे तर्कवितर्कों के खण्डन पुरस्सर यथार्थ ज्ञान कराता हुआ यह ग्रंथ सनातनधर्म में अगाध श्रद्धा पैदा कराता है ।

सर्वतंत्रस्वतंत्रपण्डित झोपाह्वश्रीवच्चाशर्मात्मज
पण्डित श्री जगदीश झा शर्मा
शारदाभवनविद्यालयप्राचीननवीनन्यायप्रधानाध्यापकः ।
निवानी वास्तव्यो मैथिलः ।

५९—एतत् प्रतिपादितविषयमनुमनुते—

अर्थ—यहाँ पर लिखे विषय को मैं भी स्वीकार करता हूँ।

श्रीनन्दन शर्मा,

श्यामाविद्यालयप्रधानाध्यापकः, काशी।

६०—एतद् विषयं प्रमाणीकरोति।

अर्थ—इस विषय को प्रमाणित करता हूं।

श्रीइन्द्रधर शर्मा,

व्याकरणाचार्य, मिथिला।

६१—प्रतिपादितमेतत् सर्वं समुचितमिति प्रमाणीकरोति।

अर्थ—ऊपर लिखे युक्तियुक्त विषय को प्रमाणित करता हूं।

पं० लक्ष्मीनारायण झा,

आयुर्वेदाचार्य ज्यौ० शा० साहित्यालंकार

श्रीभुवनेश्वरीऔषधालय; मधुवनी, दरभंगा।

६२—अत्र सम्मतिमुपादत्ते।

अर्थ—यहाँ मेरी भी सम्मति है।

श्रीश्यामसुन्दर झा,

न्यायाचार्य; ब्रह्मपुर, दरभंगा।

६३—चराचरात्मकेऽत्र संसारे प्रायेणैकंपंथानमेके कटूक्तिभिरपमन्वते परे परमिति निश्चयचमेव चेतनाचणानान्तमेव विरोधमुन्मुलयितुं श्रुतिसिद्धं च वर्त्म व्यंजयितुं श्रीमदुदासीनवरश्रीगंगे-

श्वरानन्द स्वामी महोदयः श्रौतमुनिचरितामृतं नाम पुस्तकरत्न मुपायनीकृतवान् । विदुषां पारमार्थिकीं दशामुपसेदुषामत्रहि-ग्रन्थे धार्मिकमितिहासं मोक्षपरिभाषाविकासं आश्रमचतुष्टयकर्त्तव्य प्रकाशं धर्मान्तरावलंबिमतनिरासं पारस्परिकमुदासीनानां विरोधस्य परिहासमन्यच्च प्रसङ्गागतं विषयं निरतिशयगंभीरया दृष्ट-श्रुतिस्मृतिपुराणागमसूत्रवृत्तिग्रन्थपरतीरया धिया व्यानक् । ग्रन्थेऽत्र परिशील्यमाने प्रायेणाद्य यावदुपक्रान्ताः समस्ता अपि साम्प्रदायिकविप्रतिपत्तयः समाहिता इव लक्ष्यन्ते । सूत्रविराजोर्विवेचनाऽकर्षतीव चेतांसि वाचकानाम् । वस्तुतः श्रीगंगेश्वरानन्द स्वामिदेवेन महतापरिश्रमेणागाधं शास्त्रसमुदायसागरं धिषणासंथनेनोद्धृत्य श्रौतमुनिचरितामृतमुज्जीवित इवायमधुना धुताखिलाकमणः सनातनोधर्मः । आशासे धर्मप्राणा जनताऽस्य श्रमस्य मूल्यमेतदीयमतानुसारि धर्मावलंवनेनार्पयित्त्वा चिरायानृण्यमधिगमिष्यति । स्वं च शिरोऽस्यरचयितुरन्तिकं श्रद्धाभरेण नमयिष्यति । शमिति ।

विद्वानों से यह बात छिपी नहीं कि स्थावरजंगमात्मक जगत में परस्पर एक मार्ग को कोई अच्छा तथा कोई बुरा कहता है, इसी विरोधानल को शान्त करने के लिये तथा चिरकाल से आवृत प्रायः वैदिक मार्ग को प्रदर्शित करने के लिये श्री स्वामी गंगेश्वरानन्दजी ने एक पुस्तकरत्न बनाकर पक्षपातगंधशून्य विद्वद्‌जनों के समक्ष उपस्थित किया, इस ग्रंथ में धार्मिक इतिहास, तथा चतुर्थाश्रमविवेक, और चारों आश्रमों

का परम कर्त्तव्य इत्यादि जटिल विषयों का अच्छी तरह प्रदर्शन कराते हुए इतरमत प्रदर्शित आक्षेपों का अच्छी तरह समाधान किया है। इस ग्रंथ के देखने पर पारस्परिक साम्प्रदायिक संघर्ष उत्पन्न होने की जगह ही नहीं रहती, शास्त्रीय प्रमाणों की विवेचना हृदयाकर्षक है। अधिक क्या कहें, स्वामीजी ने अपने बुद्धिरूप मंथन दंड से समस्त शास्त्ररूपी समुद्र को मंथन कर निकले ज्ञानामृत से सनातन धर्म को तृप्त कर उसमें पुनः स्फूर्ति तथा चमत्कृति का संचार कर दिया है। मैं आशा करता हूं कि धर्मप्राण जनता इस महात्मा के शास्त्र अनुमोदित निर्दिष्ट पथ के अनुसार करती हुई, तथा श्रद्धा से इस मुनिपुंगव के लिये प्रणामांजलि समर्पण करती हुई अपने को मुनि के ऋण से मुक्त कर लेगी।

ईश्वरनाथझा शर्मा व्याकरणतीर्थः।
नवानीस्थशारदाभवनविद्यालय व्याकरणाद्यध्यापकः।

६४—अत्र सम्मनुते।

अर्थ—यहाँ सम्मति देता हूं।

पं० श्रीतेजनारायण झा,
व्याकरणाचार्य अवाम, दरभंगा।

६५—पं० प्रभुनाथ झा,
नड़ुआर, पो० झंझरपुर, दरभंगा।

६६—पण्डित प्रवर श्रीमदुदासीनवर्य श्रीगंगेश्वरानंद स्वामि विरचितमवलोक्य श्रौतमुनिचरितामृतमुद्वेलेव प्रमोदोदधिनाऽप्लावितमिव मम चेतःक्षेत्रम्, अत्रामूलचूलं विस्तीर्णवतः सनातनधर्मस्य

सारवतीविवेचना शास्त्रीयमर्यादानुसारिका तया सरण्या विहिताऽस्ति, यामालोच्य भ्रष्टपथा अपि प्रायेण प्राप्स्यन्ति प्रथीयांसं धर्मपथम् , नात्र ग्रंथे सनातनधर्मविरुद्धः कोऽपि विषयः, किन्तु पामराणामनालोचिततत्त्वानामनारूढमूलमाक्षेपद्रुममत्र ग्रंथे युक्तिकुठारैश्छिन्नवतोऽस्यमुनेः प्रशंसयाऽलम् , इति लघुनैवाक्षरराशिना स्वां कृतज्ञतां प्रकाशयति ।

पण्डित प्रवर स्वामी गंगेश्वरानंदजीने एक श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तक बनाया, जिसके समीक्षणसे उत्पन्न आनन्दरूपी समुद्र के उमड़ जाने पर मेरा अन्तकरण रूपी क्षेत्र आप्लावित हो गया। इस ग्रन्थ में शुरू से आखीर तक सनातनधर्म का इस तरह सारयुक्त विवेचन किया है, जिसे पढकर मार्गभ्रष्ट मनुष्य भी बड़ी आसानी से अपने ध्येय मार्ग को प्राप्त कर सकता है, सनातन धर्म विरुद्धांश की इसमें गंध भी नहीं। वेदादि प्रमाण की सान पर चढे हुए प्रवलयुक्ति रूप कुठार से स्वार्थान्ध तत्त्वज्ञानानभिज्ञ वावदूकों के निर्मूल आक्षेप रूपी वृक्ष को उखाड़ने में बद्ध परिकर श्री स्वामीजी की प्रशंसा जितनी की जाय उतनी ही थोड़ी है। अतः मैं स्वामी जी के चरणों में परिसंख्यात शब्द रूपी कुसुमांजलि समर्पण करता हुआ अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करता हूं

यदुपति मिश्रः,

नवानी ।

६७—अत्रसम्मतिः पं० श्रीनवोनाथ झा शर्मणो व्याकरणतीर्थस्य ।

उपरोक्त सम्मति का हम हृदय से अनुमोदन करते हैं ।

६८—अत्र सम्मतिः पं० श्रीगौरीनाथ झा व्याकरणाचार्यस्य, चकफतेहा, दरभंगा।

६९—पुरोक्तमेतत् सम्यगिति प्रमाणीकरोति।

अर्थ—ऊपर लिखा बिल्कुल ठीक है यह प्रमाणित करता हूं।

श्रीविश्वनाथ झा,

व्याकरणाचार्य, वेदान्तशास्त्री, चंपापुर, मोतीहारी।

७०—स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दविरचितमिदं श्रौतमुनिचरितामृतनामकं पुस्तकं सनातनधर्मप्रधानप्रवर्त्तक श्रीमच्छंकराचार्यमताऽविरुद्ध वैदिकमंत्रप्रामाण्यप्रदर्शकम्, यथावत् पर्यालोच्य हृष्टमना प्रमाणीकरोमि।

अर्थ—श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी का बनाया हुआ श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ वैदिक मंत्रों की प्रमाणता सिद्ध करता हुआ श्रीशंकराचार्यजी के कदापि विरुद्ध नहीं है, मैं इस ग्रन्थ का पर्यालोचन करता हुआ सहर्ष प्रमाणित करता हूँ।

श्री पं० रामेश्वर झा,

व्या० आचार्य इन्दुमती विद्यालय प्र० अ० उजान, दरभंगा।

७१—पुरोदीरितविषये सम्मतिर्ममाऽपि।

अर्थ—ऊपर लिखे विषय में मेरी भी सम्मति है।

पं० रमाकान्त शर्मा,

सं० वि० व्याकरणाध्यापकः चणौर।

७२—उक्तग्रन्थः सनातनधर्माविरुद्धः

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्म का विरोधी नहीं है।

श्री पं० सूर्यनारायण झा,
व्याकरणाचार्य हैठी, दरभंगा।

७३—श्री पं० विश्वेश्वर ठाकुर,
व्या० ती० लखनौर, दरभंगा।

७४—उदासीनसाधुमण्डलीश्वरो यतिप्रवरः स्वामि श्री गंगेश्वरानंदो हि विद्वद्वरः श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासादीनां गीर्वाणवाणीनिबद्धतयाऽऽपामरं सनातनधर्मतत्त्वप्रतिपत्तिसौकर्यमपश्यन्नतितमां सर्वजनमनोरंजनं कमनीयमेकं श्रौतमुनिचरितामृतनामकं सन्दर्भं हिन्दीभाषयानिवद्धमुपनिववन्ध। यत्र क्वचिन्मूर्त्तिपूजादिमंडनम्, क्वचिच्छ्राद्धादितत्त्वमंडनम्, इत्यादि बहुशो विषयाश्चेदानींतन जनताविप्रतिपत्तिविषया शोभनतया शैल्या युक्त्या प्रमाणेन च तत्त्वतो निर्णीतास्सन्तीति समोदमातनुते।

अर्थ—वेदादिशास्त्रों के अतिगूढतत्त्वों, तथा 'दार्शनिक फिलास्पियों का वर्णन संस्कृत भाषा में होने के कारण सर्वसाधारण प्राणि वर्ग उसके लाभ से वंचित रहता था। इसी लिये परमकारुणिक यतिवर उदासीन परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीगंगेश्वरानंदजी महाराज मण्डलेश्वर ने वेदादि सच्छास्त्रों का सार, पुराणादि धर्मशास्त्रों का तत्त्व, दार्शनिक फिलास्फी का निचोड़, हिन्दी भाषा में स्वनिर्मित श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ में कूट कूट भर दिया है, जिससे कि आबालवृद्ध प्राणिवर्ग सुख से

लाभ उठाता है। इस ग्रंथ में श्राद्ध तथा मूर्त्तिपूजा आदि का मंडन, तथा पाखंडियों के पाखण्ड का खंडन, आजकलके पल्लवग्राही चुलबुले दिमागवालों की कुतर्कों का अक्षरशः खण्डनकर सत्यसनातनधर्मका झण्डा फहरा दिया है।

श्रीप्रयागदत्त शर्मा,
मिथिलामहोमण्डलाखण्डलप्राप्त प्रशस्त धौताम्बर प्रतिष्ठा-
पत्रो व्याकरणतीर्थ शास्त्री, फुलपरास।

७५—उपर्युक्तविषयं प्रमाणीकरोति।

अर्थ—उपर लिखे विषय को प्रमाणिक मानता हूँ।

श्रीवल्लभ ठक्कुर व्याकरणाचार्य,
भगवान् सं० विद्यालय प्रधानाध्यापकः, गाड़ाटोल।

७६—कलिकालकरालफूत्कारकवलितजगतां नितान्तशान्तवेदान्तकरिवरासादितदुर्दान्तकेसरिमोहापन्नजन्तूनामनायासप्रयाससाध्यतीक्ष्णधारकुठारश्रौतमुनिचरितामृतेन सूर्योदये तम इव, अद्वैत रसानन्दबोधे चार्वाकाश्रितमार्ग इव,चेतस्यनिर्वचनीयविमतं खण्डयता अकाण्डाशान्तप्रचण्डवातावरणमुन्मूलयता बहूपकृतं जगति, समालोचनयाऽनया सनातनधर्माश्रितया स्वामिश्रीगङ्गेश्वरानन्दविरचितया किमधिकेन पल्लवितेनेति प्रमाणीकरोति—

अर्थ—जब कि समस्त संसार कराल कलिकालरूपी अजगर के विषभरे फुङ्कारों का शिकार बन रहा था, तथा सदाशान्त प्रकृति, वेदान्तरूपी दिग्गज, क्रूर चेष्टा वाले मोहरूपी सिंह से आक्रान्त था, उस समय ऐसे ग्रन्थरत्न की आवश्यकता थी जिसके प्रबल आलोक

से समस्त दिशायें प्रकाशित हो जाँय, तथा सूर्योदय के बाद अन्धकार की तरह, अद्वैतमार्तण्ड के उदय होने पर चार्वाक तर्करूपी तम सदा के लिये नष्ट होजाय, और प्रकृतिकी लीलामयी भारतभूमिमें पारस्परिक वैमनस्यभावको त्यागकर परस्परकी प्रेममन्दाकिनी बहा दी जाय। ठीक, इसी समय इस आवश्यकताकी पूर्ति श्री पं० गंगेश्वरानन्दजी महाराज ने श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ रत्न बनाकर की, जिसमें कि सब बातों का यथार्थ रूपसे समाधान किया गया है, परस्पर की बढ़ रही ईर्ष्याग्नि को श्रौतमुनिचरितामृत रूपी अमृतकी वर्षासे शान्तकर श्रीस्वामी गंगेश्वरानन्दजी "जीव–जीवातु, ने तृषित चातक रूप सनातनी जनताका बड़ा उपकार किया है, जिसकी यह जनता यावच्चन्द्र दिवाकरौ ऋणी रहेगी, पुस्तक सनातनधर्मानुकूल है, यह मैं प्रमाणित करता हूं ॥

पं० श्री श्रुतिधर झा व्या० आ० साहि०
तीर्थ० न्या० साहित्यालंकार,
शारदाभवनसंस्कृतपाठशालाध्यापक निवानी, दरभंगा।

७७—स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दप्रणीत श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तकं समवलोक्य सनातनधर्मीया एव विषयास्सन्तीति निश्चिनोति—

अर्थ—स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दका बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ देखकर मैं निश्चय करता हूँ कि इसमें सनातनधर्मीविषयोंका ही प्रतिपादन है।

श्रीनंदन झा व्याकरणाचार्य निवानी,

७८—कियच्छ्रौतग्रन्थावलोकनोद्धृततत्त्वविद्वद्वर स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दकृत श्रौतमुनिचरितामृतपुस्तकं, अधः पतित

सनातनधर्मोत्थापकं दर्शं दर्शं चेतो मे नितरामानन्दोदधौ निमज्जति किं बहुना, अत्रत्यलौकिकवैदिकयुक्तयश्च सनातनधर्मविरोधिनां विवदमानानामन्तःकरणकालुष्यं दूरीकरिष्यंत्येवेति प्रमाणयति—

अर्थ—श्रद्धेय स्वामी गंगेश्वरानन्दजीने समस्त श्रुति स्मृति आदि शास्त्रों के तत्त्वज्ञानद्वारा पतनोन्मुखसनातनधर्मके पुनरुत्थान के लिये श्रौतमुनिचरितामृतनामका ग्रन्थ बनाया, जिसको पढ़कर मैं आनन्दके समुद्रमें गोते लगाता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ, कि नास्तिकलोग इसग्रन्थ भेषज से ही निज वादकंडूति रोग का वारण करते हुए कुतर्क संपर्क से सदैव दूर रहेंगे।

पं० श्रीरत्नेश्वरठक्कुर रामप्रकाश वि० प्र० अध्यापक,

'पातेपुर' मुजफ्फरपुर।

७९—अत्रार्थेसम्मति ज्योतिर्विच्छ्रीवबुआरामशर्मणः, अड़रिया पाठशालाध्यापकस्य।

दरभंगा।

८०—श्रौतमुनिचरितामृतनामकं पुस्तकं सनातनधर्माविरोधि श्रीमच्छंकराचार्यमताविरोधि चेति प्रमाणी कुर्मः।

अर्थः—श्रौतमुनिचरितामृतग्रंथ सनातनधर्म का विरोधी नहीं हैं और न श्रीशंकराचार्य के मत की निन्दा करता है।

पं० चिरंजीव शर्मा व्याकरण काव्यतीर्थ·

लगमा—दरभंगा।

८१—सम्मतिरत्र चतुराननशर्मणः।

दरभंगा।

८२—अत्रसम्मनुते ।

पं० श्रीचक्रधर झा व्याकरण काव्यतीर्थ,

लखनौरा, दरभंगा ।

८३—सम्मतिरत्र ।

पं० श्रीमहीधरमिश्रस्य ज्यौतिषाचार्यस्य,

सुगौनाविद्यालयाध्यापक, दरभंगा ।

८४—पण्डित श्रीबिहारीमिश्रो व्याकरणाचार्यो व्याकरणतीर्थश्च ।

चिकना वि० प्रधानाध्यापक दरभंगा ।

८५—उदासीनसंप्रदायप्रसिद्धवेददर्शनाचार्यस्वामिवर श्रीगंगेश्वरानन्दश्रौतमुनिविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं नाम पुस्तकं यथावकाशं वहुपु स्थलेषु पर्यालोचि, यावदवलोकितमस्य सनातनधर्मसिद्धान्तपरिपोषकत्त्वमेवोपलब्धम्, अवशिष्टभागोऽपि न प्रस्खलनमापद्येत, सनातनात् पथो जात्वित्युदासीनसंप्रदायाभिज्ञतया निश्चेतुं शक्यते मया, प्रत्युत विधर्मिपक्षप्रतिक्षेपदक्ष एवाऽस्त्यविकल इति सनातनधर्मकटाक्षचोदक्षेमप्रक्षेपतत्पक्षरक्षणयोर्जाग्रन्नव्यसभ्यतायामपि सनातनधर्मप्रभावसमावेशनस्य चाऽवलंबनत्त्वेनाखिलसनातनधर्मिजनताशिरःश्लाघनीयतामर्हत्यसौ ग्रन्थः । वर्णाश्रमावतारमूर्तिपूजनपंचदेवतोपासन, मृतश्राद्ध, विधवाविवाहखण्डन, श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणसिद्धान्तानुसरणवेदान्तानुकूल शुद्धाद्वैतमतप्रतिपादनादीनां समेषां सनातनधर्मरहस्यानां समावेशेन प्रतिक्षेप्तुमशक्यत्वादिति प्रतिजानीते ॥

अर्थ—उदासोन संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वेददर्शनाचार्य पं० गङ्गेश्वरानन्द मंडलेश्वरजी ने श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ बनाया है, उसे मैंने यथावकाश बहुत स्थलों में देखा तो सर्वथा सनातनधर्म के अनुकूल विषयों का प्रतिपादन करने से सनातनधर्मानुकूल जानपड़ा, उदासीन संप्रदायकी पूर्णतया वाकफीयत होने से मेरा यह अटलनिश्चय है, कि कोई स्थलभी सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं, सनातनधर्म पर विपक्षियों द्वारा किये गये आक्षेपों का उचित प्रत्युत्तर देने से, तथा इस नई रोशनी के जमाने में भी सनातनधर्म के विषयों में आस्तिकता भाव लाकर धर्म के आगे विपक्षियों के मस्तक झुकाने में काफी सिद्धहस्त हो चुका है। इस लिये प्रत्येकव्यक्तिका श्रद्धास्पदमूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, विधवाविवाह खंडन आदि शास्त्रीय विषयों की तत्त्वभरी समालोचना करने से यह ग्रंथ सनातनधर्मी जनता का श्रद्धेय एवं उपादेय है॥

श्री त्रिलोकनाथमिश्रः
श्रीमन्मिथिलामहीमंडलाखण्डलच्छत्रच्छायावर्धित म. म.
विद्यापीठ प्रधानाध्यापक-लोहना।

८६—अयं ग्रन्थः सनातनधर्मस्याविरुद्ध इति प्रमाणीकरोति।
पं० श्रीजगदीश झा शर्मा व्याकरणाचार्यः—
अवामग्रामवास्तव्यः, दरभङ्गा।

८७—सम्मतिरत्रार्थे श्री पं० कपिलेश्वरस्य म० म० विद्यापीठ लोहना।

८८—सम्मतिरत्रार्थे श्रीनन्दनमिश्रस्य ज्यौ० अध्यापक म० म० वि० पी० लोहना।

८९—कृतसम्मतिकोऽत्र श्रीकुंवरलाल झा वेदाध्यापक म० म० वि० पी० लोहना ।

९०—सम्मतिरत्रार्थे श्रीदुर्गाधरशर्मणः न्या० शा० प्र० अ० ग० म० वि० पी० लोहना ।

९१—सम्मतिरत्र श्रीहरिनारायणशर्मणः, व्या० प्र० अ० म० म० वि० पी० ल० लोहना ।

९२—सुगृहीतनामधेयश्रीस्वामि गंगेश्वरानन्दविरचितः श्रौतमुनि-चरितामृतग्रन्थः, वेदप्रतिपादितमूर्त्तिपूजावतारवादस्थापनावैराग्यादि विषयप्रतिपादकतया सनातनधर्मानुकूलनिबन्धेष्वेव समवैतुमर्हतीति सम्मनुते ।

अर्थ—स्वनामधन्य स्वामी गंगेश्वरानंदजी का बनाया श्रौतमुनि चरितामृत ग्रंथ वेदादि से वर्णित मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, प्रव्रज्या, आदि प्रसिद्ध विषयों का प्रतिपादक है, अतः यह ग्रंथ सनातनधर्म के ग्रंथों की लिस्ट में दर्ज होने लायक है ।

पं० श्री निरसनमिश्रशर्मा

पी. एन्. एस. विद्यालयाध्यक्ष

लक्ष्मीपुर ।

९३—स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दप्रणीतश्रौतमुनिचरितामृतनामधेयं ग्रन्थमहं साकल्येन सम्यगवलोक्य प्रतिजाने, यदयं ग्रन्थः सनात-नधर्ममतपोषकः, एवं च सनातनधर्मावलंबिभिर्ग्राह्यो मान्यश्चेति ।

अर्थः--स्वामी गंगेश्वरानन्द जीके बनाये श्रौतमुनिचरितामृत नामक संपूर्ण ग्रंथको अच्छी तरह देख मुझे बड़ी प्रसन्नता हुयी। यह पुस्तक सनातनधर्मका नितान्त पोषक है, इसलिये सनातनियों को अवश्य लेना चाहिये।

श्री पं० शशीन्द्र पाठक साहित्यायुर्वेदाचार्य काव्यतीर्थ
चंद्रज्योतिऔषधालय, दरभंगा।

९४—स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दप्रणीतस्य 'श्रौतमुनिचरितामृत-नामधेयस्य पुस्तकरत्नस्य विलोकनेन नितरां प्रसीदामि, पुस्तकमदः सनातनधर्मपोषकतयाऽवश्यमेव सनातनधर्मावलम्बिनां सन्तोषं जनयेदिति बलवद् विश्वसिमि।

अर्थ—स्वामि गंगेश्वरानन्द जी प्रणीत श्रौतमुनिचरितामृत नामक एक वृहत् ग्रन्थरत्न को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुयी, यह पुस्तक सर्वथा सनातनधर्म का पोषक है, मैं विश्वास करताहूं कि इस ग्रंथ से सनातन-धर्मी जनता का बहुत उपकार होगा।

पं० श्री उमेश झा शास्त्री
मंत्री वर्णाश्रमस्वराज्यसंघशाखासभा—नवानी।

९५—अहमपि प्रमाणयामि ग्रन्थस्य सनातनधर्माविरुद्धत्वम्।

पं० श्रीहरिराम झा ज्यौतिषाचार्यः—
नवटोलपाठशालाध्यापकः, (दरभङ्गा।)

९६—स्वामि श्रीगंगेश्वरानंदविरचितोऽयं ग्रंथो मया सम्यगवलोकितः, स चायं शास्त्रसम्मत इति प्रमाणयति।

अर्थ—स्वामी गंगेश्वरानंद जी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ मैंने भली भांति देखा, यह ग्रंथ सनातनधर्मानुकूल होने से शास्त्र सम्मत है, ऐसा मैं प्रमाणित करता हूं।

श्री पं० सत्यदेव मिश्र मधुवनी
सं० पाठशाला प्र० अ०

९७—व्याकरणाचार्यो मुक्तिनाथ शर्माऽऽपि।

९८—श्रीहलधर ठाकुर शर्मा साहित्यतीर्थ मधुवनी दरभंगा।

९९—श्रीभगीरथ मिश्र शर्मा व्या० ती० मंगरौनी पाठ-
शालाध्यापकः।

१००—स्वामि श्रीगंगेश्वरानंदविरचितमिदं श्रौतमुनिचरितामृतं पुस्तकं मयावलोकितं, इदञ्च सनातनधर्मानुकूलम्, इतिप्रमाणयति।

अर्थ—स्वामी श्रीगंगेश्वरानंद का रचा श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ हमने देखा और उसे वास्तव में सनातनधर्मानुकूल पाया।

श्री वासुदेव ठाकुर व्या० का० तीर्थ
वाट्सन् हाईस्कूल प्रधानाध्यापक, मधुवनी।

१०१—पूर्वोक्तमेतत् सम्यगिति प्रमाणीकरोति।

श्रीउमाकान्त झा व्या० सा० तीर्थ वेदशास्त्री
वाट्शन् हाईस्कूल मधुवनी १३—९—३३

१०२—स्वामी श्रीगङ्गेश्वरानन्दनिर्मितं श्रौतमुनिचरितामृतं सनातनधर्मप्रधानीभूत मूर्त्तिपूजा, अवतारवादादि समर्थकतयादरणीयमिति प्रमाणयति।

अर्थः—स्वामी गंगेश्वरानन्द जी का बनाया हुआ यह श्रौतमुनि-चरितामृत ग्रंथ सनातनधर्मके प्रधान २ विषय मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि का सम्यक् प्रतिपादक होने से अत्यादरणीय है ।

श्रीपुण्यनाथ मिश्र न्यायोपाध्याय ।

सं० वि० न्या० शा० अध्यापक, मधुवनी ।

१०३—स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दनिर्मितं श्रौतमुनिचरितामृतं सनातनधर्मप्रधानीभूत मूर्त्तिपूजनावतारवादादिसमर्थकतयाऽऽदरणीयमिति प्रमाणयति ।

अर्थ—स्वामि श्रीगंगेश्वरानंद जी का बनाया यह श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्म के मुख्यविषय मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, आदि का प्रतिपादक होने से अत्यादरणीय है ।

श्रीपुण्यनाथ मिश्रः न्यायोपाध्यायः,

सं० वि० न्या० शा० प्र० अ० मधुवनी ।

१०४—श्री श्रौतमुनिचरिताभिधानमवेक्ष्य पुस्तकमादरात् ।
गङ्गेश्वरानन्दाभिधान स्वामिवर्य विनिर्मितम् ॥ १ ॥
श्रीमत् सनातनधर्म मुज्जीवितमिवाऽयं मन्यते ।
नहि तद्विरोधिवचोऽत्र किञ्चिदितोऽधिकं न वितन्यते ॥२॥
वाग्जालबन्धनमत्र स्वाभिनिवेशमस्तु सतां मतम् ।
तेषा मभीप्सितमस्ति येषामुन्नतिः सुकृतावलेः ॥ ३ ॥
ईहेऽहमत्र जना भवन्तु धृतादरा गतमत्सराः ।
स्वं धर्ममुन्नतमीक्षितुं वाञ्छन्ति ये ते तत्पराः ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृताभिध, ग्रंथ इक देखा जो मैं,
स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दकृति कलिनाशिनी ।
सादर पढ़ा प्रत्यंश इसका, धर्म की प्रतिपादिनी,
श्रीमत् सनातनधर्म की उज्जीवनी ध्वजिनी बनी ॥
सच्छास्त्र के प्रतिकूल इसमें लेख कोई भी नहीं,
मैं अधिक क्या वर्णन करूं बस है गुणों की यह खनी ।
धार्मिक जनों को ध्येय हो दुर्जन विदारकलेखनी,
सौभाग्यशाली सज्जनों की है बनी श्रद्धेय यह ॥
शिरमें सदा लाये रहो यह है सदा हीरक कनी,
प्रार्थनामेरी है यह विद्वज्जनों से साञ्जलि ।
मात्सर्य तज आदर करो,ऐसी अभी तक ना बनी,
धर्म ध्वजा, ऊचीं रहे शुभ कामना श्रीराम की ॥
अपनाइये इसको त्वरा से आप विज्ञशिरोमनी ।

श्रीरामचन्द्र मिश्र व्या० आ० का० ती०
साहित्यालंकार, न्या० निष्णात
वे० वागीश, मीमांसामार्तण्ड,
मुजफ्फरपुर ।

१०५—पं० मधुसूदन झा ज्यौतिषाचार्य मिथिला सं० वि० प्र० अध्यापक, लहेरियासराय ।

१०६—सम्मतिरिह हरिनन्दनशर्मणः, आयुर्वेदाचार्यस्य । सि० प्रो० ग अ० स्कूल पटना ।

कमलाऔषधालय; वाकरगंज—बाँकीपुर ।

१०७—राजपंडित रामनाथ झा ज्यौ० आ० ती० देवास जुनीयर।

१०८—पं० श्रीछतनेश्वर झा ज्यौतिषतीर्थ, पीताम्बर सं० पाठशालाध्यापक, गुगवना।

१०९—पं. श्री मधुसूदनपाठकः सांख्योपाध्यायः, लोकवन्धु संस्कृत पाठशालाध्यापकः।

११०—पं. श्रीकमलाकान्त झा व्याकरणतर्कतीर्थ व्याकरणाध्यापक मिथिलासंस्कृतविद्यालय, लहेरियासराय।

१११—पं. श्रीहरिश्चन्द्र झा कविराज मिथिला संस्कृत विद्यालय, लहेरियासराय।

११२—पं. श्रीरामबुझावन चौधरी, आयुर्वेदाचार्य; मिथिला संस्कृत विद्यालय, लहेरियासराय।

११३—पं. श्रीवालमुकुन्द मिश्रः ज्यौतिष काव्यतीर्थ साहित्योपाध्याय वकील, मधुवनी दरभंगा।

११४—पुरादिशंकराचार्यै र्नास्तिकाश्च पराजिताः।
तथा गंगेश्वरानंदैः साम्प्रतं ते विनिर्जिताः ॥१॥
अतो विद्वद्वरैस्सर्वै र्ग्राह्यमेव मिदं शुभम्।
पुस्तकं रचितं तैश्च वेदधर्म समन्वितम् ॥ २ ॥
रामहितेन स्वीकृतं कसरौर ग्राम वासिना।
शिवंनिष्ठेन विदुषा नाम्ना ग्रंथस्य सम्मुदा ॥३॥

अर्थ–बौद्धों के जमाने में श्रीशङ्कर, आचार्य स्वामी
नास्तिकों को जीत कर आस्तिक बनायो है ।
श्रौतमुनिचरित पीयूष को बनाय करि,
गंगेश्वरानन्द आय अब उन्हींको भगायो है ॥
श्रुति और स्मृति इतिहास औ पुराण आदि
शास्त्र के प्रमाणों से स्वमत दरशायो है ।
शुरू से आखीर तक एक बार पढियेगा
श्रीरामहितजी ने ये स्वमत भी सुनायो है ॥

पं० रामहित झा,
मिथिलामहीमण्डलाखण्डलब्धधौतप्रतिष्ठा व्या० का०
तीर्थ साहित्यभूषण कसरौर वजरुआ, दरभंगा ।

११५—स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृत नामकं पुस्तकं सम्यगालोक्य सनातनपोषका एव विषयाः सन्तीति, अतः सनातनधर्मिभिरेतत् ग्राह्यमिति प्रमाणयति ।

अर्थ—स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दजी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ मैंने देखा, उसमें सब विषय सनातनधर्म के पोषक ही पाये, उसके विरुद्ध कुछ नहीं मिला, अतः मैं सर्वसाधारण सनातनधर्मियों को यह सूचित करता हूं कि यह पुस्तक प्रत्येक सनातनधर्मियों को लेनी चाहिये ।

श्री पं० भूषण मिश्र,
व्याकरणतीर्थ सरस्वतीप्रकाशसंस्कृतपाठशाला
प्रधानाध्यापक आदौरी, मुजफ्फरपुर ।

११६—अहमपि ग्रंथस्य सनातनधर्माविरुद्धत्वम् ।

मैं भी प्रमाणित करता हूँ कि यह ग्रंथ सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं ।

पं० श्रीहरिराम झा ज्योतिषाचार्य
सं० पाठशालाध्यापक, नवटोल, दरभंगा ।

११७—अयं ग्रन्थः सनातनधर्मस्याविरुद्धोऽस्ति ।

अर्थ–यह ग्रंथ सनातनधर्मानुकूल है ।

पं० श्रीजगदीश झा शर्मा व्याकरणाचार्य;
अवाम, दरभंगा ।

११८—स्वामी श्रीगंगेश्वरानन्दप्रणीत श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तकं सनातनधर्मानुकूलतया सनातनधर्मिभिरुपादेयमिति प्रमाणी करोति ।

अर्थः—स्वामि गंगेश्वरानंदजी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ सनातनधर्मानुकूल होने से सनातनधर्मियों को ग्राह्य है ।

पं० नेवालाल शर्मा ज्योतिषाध्यापक,
लक्ष्मीवती सं० पाठशाला चकफतेहा,
मुजफ्फरपुर ।

११९—उररीकरोत्यमुमर्थम् ।

इस अर्थको स्वीकार करता हूँ ।

पं० झिंगुरशर्मा
लक्ष्मीवती सं० पाठशालाध्यापक चकफतेहा, दरभंगा ।

१२०—सम्मान्योऽयमर्थः

अर्थः–यह बात हमें भी स्वीकार है ।

शिवमहाराज पंडित श्री वैद्यनाथशर्मा

१२१—नाऽविदिततरं सर्वेषां विदुषां सनातनधर्मजुषामन्येषां वा यत् कलिकाले विकराले, आर्यसमाजिप्रभृतिभिराक्षिप्यमाणं सनातनधर्ममालोच्य वेददर्शनाचार्य श्रौतमुनि श्रीगंगेश्वरानंदस्वामिनो युक्तिप्रमाणाभ्यां प्रतिवादिमतंखण्डयन्तः प्रचारयन्तश्च प्रचुरं सनातनधर्मं गुर्जर-महाराष्ट्र-पंचनदादिप्रान्तेषु सनातनधर्म मूर्त्तय इव प्रतिभासन्ते, साम्प्रतं त एव स्वामिपादाः प्रतिवादिमतमुन्मूलयितुं प्रकाशयितुं च श्रुतिस्मृति सिद्धं वर्त्म श्रौतमुनिचरितामृतनामक पुस्तकं विरचयन्तोऽकम्पानुकंपां प्रादर्शयन् । पुस्तकमिदमजस्रं लोचनगोचरतामानीतं सनातनधर्मरहस्यपुंजमिव प्रतिवादिमतनिरसनपूर्वकमूर्त्तिपूजादिसमर्थकतयाऽमृतमयमिव चमत्करोति हृदये, झटिति सनातनधर्मिभिरिदमुपादेयमिति प्रमाणीकरोति ।

अर्थ—सनातनधर्मावलंबिविद्वद्वृन्द अथवा अन्य सभ्य समाज से यह बात छिपी नहीं है कि इस विकराल कलिकाल के शासन में, आर्यसमाज प्रभृति द्रोही संस्थाओं द्वारा सनातनधर्म पर क्या २ अनिर्वचनीय अत्याचार हो रहे हैं। धर्मकी इस दयनीय दशा को देखकर दुःखी चित्त श्री महाराजने धार्मिक उन्नति के लिये कमर कस कर पंजाव, सिंध, विलोचिस्तान, गुजरात, महाराष्ट्र, आदि अनेक प्रान्तों में सनातनधर्म का डंका वजाकर नास्तिकों के वातावरणको छिन्न भिन्न कर दिया।

उन्हीं स्वामीजीने विपक्षियों का मुख मर्दन करने के लिये, श्रुतिस्मृतिप्रतिपादित विस्मृतप्राय सनातनधर्म मार्ग को बतलाने के लिये श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथरत्नबनाकर हम पर अपार कृपा की है। यह ग्रन्थ

नास्तिकमत का खण्डन कर सनातनधर्म के अति गूढ़ रहस्यों का प्रतिपादन करता हुआ, धर्मप्राण ऋषिसन्तान के हृदय में, अमृतमय नवजीवन का संचार कर रहा है। अतः सनातनधर्मी भाइयों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

पं० श्रीनमोनारायण झा
व्या० आ० सा० ती० न्या० शा० साहित्यालंकार
चकफतेहा, मुजफ्फरपुर।

१२२—पूर्वोक्तमेतत् सम्यगिति।

अर्थः—ऊपर लिखा बिल्कुल ठीक है।

श्रीविहारीमिश्र व्याकरणाचार्य सं० वि० प्र० अ०
चिकना, दरभंगा।

१२३—पूर्वोक्तमुररीकरोति सर्वम्।

अर्थः—ऊपर लिखा सब स्वीकार करता हूं।

श्री पं० गणेशमिश्र व्या० आचार्य, साहित्याचार्य
अमपुर सं० वि० प्रधानाध्यापक,
अमरपुर, भागलपुर।

काशीस्थ हिन्दुविश्वविद्यालयवेदान्ताध्यापकझोपाह्वश्रीलक्ष्मीनाथ सम्मतं मतं वयमप्यङ्गी कुर्मः।

१२४—श्रीतेजनारायणठक्कुरः, व्याकरणाचार्यः।
वालीआद्याविद्यालयस्य प्रधानाध्यापकः,
दरभङ्गा।

१२५—श्रीवटेकृष्णझा, व्याकरणाचार्यः,
मु० हैठी, दरभङ्गा।

१२६—उदासीनप्रवर श्रीगंगेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं नाम पुस्तकं श्रुतिपुराणादिप्रतिपादितसनातनधर्मानुसारीति नात्र संशयलेशोऽपीति समोदमामनुते।

अर्थः—उदासीनप्रवर स्वामी गंगेश्वरानंदजीनिर्मित श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ श्रुतिस्मृतिपुराणप्रतिपादित सनातनधर्म के अनुकूल है। इसमें कोई सन्देह नहीं। पं० शिवनन्दनशर्मा ज्योतिषतीर्थ,

वेलमोहन-दरभङ्गा।

१२७—एतत् प्रतिपादितविषयमनुमनुते।

व्याकरणतीर्थ झोपनामा श्रीनन्दनशर्मा

काशीस्थ श्यामाविद्यालयप्रधानाध्यापकः।

१२८—श्रौतमुनिचरितामृतपुस्तकं साक्षात् परम्परया वा शास्त्रसम्मतमिति प्रमाणयति,

अर्थ—यह श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ परम्परा से, तथा स्वयं भ सम्मत है। श्री पं० वलीश्वरदत्त शर्मा,

आ० सां० आ० पा० देवप्रसाद संस्कृत पाठशाला, बलिया।

१२९—श्रीमदुदासीन गंगेश्वरानन्दविरचितमेतच्छ्रौतमुनिचरितामृतं वस्तुतः शास्त्रसम्मतं, सनातनधर्मावलम्बिनां कृते सर्वथोपकारकमिति प्रमाणयति।

अर्थ—स्वामी गंगेश्वरानन्दजी उदासीन का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ वास्तव में ही शास्त्रानुकूल है। अत एव सनातनियों का सर्वथा उपकारक है। पं० केशवउपाध्याय,

व्याकरणाचार्य, दे० पु० सं० पा० बलिया।

१३०—श्रौतमुनिचरिताख्यमिदं पुस्तकं सम्यगुपपादितम्, इति प्रमाणयति।

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृत नाम का यह पुस्तक शास्त्रादि प्रमाणों द्वारा प्रतिपादित है।

पं० सरयूप्रसाद मिश्र,
दे० प्र० सं० पा०, बलिया।

१३१—सम्मतिरत्रार्थे—

पं० शिवगोपाल शुक्लः,
ज्यौतिपाध्यापक जुबिलीप्रसाद सं० पा० बलिया।

१३२—सम्मतिरत्रार्थे रामस्वरूपमिश्रस्य जु० सं० पाठशालाया अध्यापकस्य

बलिया।

१३३—सम्मतिरत्रार्थे वनभुराम ज्योतिर्विदः

स्थान बलिया।

१३४—उक्तार्थेसम्मतिः अभयराजशर्मणआयुर्वेदविशारदस्य

बलिया।

१३५—सम्मतिरत्रार्थे मुनीश्वरशर्मणः

बलिया।

१३६—सम्मतिरत्र ज्योतिर्विदः पं० रामप्रसादशर्मणोऽपि

बलिया।

१३७-परम पिता परमात्मा की माया अगाध है। इसका पार पाना कठिनही नहीं, अपितु असंभव है। इसी कारण से प्राणिमात्र का अन्तःकरण तथा भावनायें भिन्न २ एवं विचित्र हैं, संसार में कोई भी वस्तु सर्वसाधारण के लिये रुचिकर या अरुचि कर नहीं हो सकती।

सर्वसाधारण सनातनधर्मावलम्बि जनता के उपकार के लिये वेद दर्शनाचार्य पं० प्रकाण्ड श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजीमहाराजने एक श्रौतमुनिचरितामृत नामक पुस्तक लिखी है।

उक्त पुस्तक में आदि से अन्त तक सनातनधर्म के रहस्यों का ही युक्ति युक्त प्रतिपादन किया गया है। सभी अवतारों की लीलाओं का वेद मंत्रोंसे पोषण किया है, एवं मूर्त्तिपूजा तथा श्राद्धादि अनेक विषयों को वेदमंत्रोंसे भी सिद्ध किया है। वस्तुतः इस पुस्तकका प्रयोजन ही सनातनधर्म प्रचार है।

स्वामीजीमहाराजने प्रसंगागत अपने उदासीन संप्रदाय प्रवर्तक ऋषि, मुनि, तथा कतिपय आचार्यों के संक्षिप्त जीवनचरित्र लिख कर श्री सनातनधर्मका महान् उपकार किया है। इसलिये सनातनधर्म रहस्यों के साथ २ उदासीनसंप्रदायका कुछ उत्कर्ष झलकना अस्वाभाविक न था, और यह कोई नवीन या आश्चर्यजनक बात भी नहीं है। सभी संप्रदायों के महापुरुष सनातनधर्म की बातों के साथ २ अपने संप्रदाय का भी कुछ परिचय या उत्कर्ष लिखा ही करते हैं।

इस पुस्तक के विषय में भी सभी प्राणियों की एक जैसी ही भावना रहे, यह बात प्रकृतिदेवीके नियमों से सर्वथा विरुद्ध है। संसार का कोई मनुष्य ऐसे पदार्थ की रचना करही नहीं सकता, जिसके विषय में सब की एक ही भावना रहे। हमारे ऋषिमुनियों ने सनातनधर्मकी जो मर्यादा निर्धारितकी है, उसके विषय में भी नानाप्रकारकी भावनायें तथा विप्रतिपत्तियां प्रतिदिन देखने में आही रही हैं। यही नहीं। ईश्वर निर्मित मानमर्यादाओं के विषय में भी प्रतिप्राणी की भिन्न २ ही रुचि

और भावनायें हैं। फिर इसी पुस्तक के विषय में सब की एक भावना हो यह किस प्रकार हो सकता था। इसके विषय में कुछ प्रतिष्ठा लोलुप तथा परोत्कर्षासहिष्णु गुसाईं साधुओं ने कुछ मिथ्याभ्रम उत्पन्न करके अनुचित प्रयास किया है।

कुछ ईर्ष्यालू गुसाइयों का कथन है कि यह पुस्तक विषसंपृक्त अन्नवत् है। इस विषय में हमारा केवल इतना ही निवेदन है कि विष तथा अमृत का भेद भी अपेक्षा कृत है। संसार की सभी वस्तुयें किसी के लिये विष और किसी के लिये अमृत समान हैं। जो पदार्थ दैत्यों के लिये विष था वही भगवान् शंकर के लिये अमृत था। भगवान् भास्कर की शुक्लप्रभा प्राणिमात्र के लिये अमृतमय होने पर भी क्या कौशिक के लिये विष नहीं है! इससे यह सिद्ध हो गया कि जिस प्रकार पीत-रोगी शँखको जैसा समझता है, वह शंख वास्तव में वैसा (पीत) नहीं है। सूर्य का तेज उल्लू के लिये विष तुल्य होने पर भी अन्य सभी प्राणियों के लिये अमृत ही है। इसी प्रकार कोई ईर्ष्यालू उक्त पुस्तक के विषय में चाहे कुछ भी भावना रक्खे, परन्तु सत्सनातनधर्मावलम्बियों के लिये 'श्रौतमुनिचरितामृत, एक अद्वितीय रत्न है। आज हमारे मन्दिरादि पवित्र धार्मिकस्थान विपक्षियों के लिये विषतुल्य हो रहे हैं, एतावता हम सनातनीभी मन्दिरोंका मानना छोड़ दें, यह कैसे हो सकता है। जब दृष्टि में या भावना में कोई किसी प्रकारका दोष विद्यमान होता है तो निर्दोष वस्तु में भी दोष प्रतीत होने लगते हैं। इस लिये श्रौतमुनिचरितामृत सर्वथा सनातनधर्मानुकूल है। इसी विषय में काशी के अनेक प्रसिद्ध २ पण्डितों की संमतियां है। सभी ने

एकस्वर से कहा है कि पुस्तक सनातनधर्म के अनुकूल है। जिस किसी ने उक्त पुस्तक को सनातनधर्म के विरुद्ध या आर्यसमाज का रूपान्तर लिखा है वह रागद्वेषमूलक है। इस विषय में मैं शास्त्रार्थ करने को भी सन्नद्ध हूं।

निवेदक—वेदान्तकेसरी,
अमरेश्वरमुनि, बलिया।

१३८—श्रीस्वामी गंगेश्वरानन्दप्रणीते श्रौतमुनिचरितामृतनाम्नि ग्रंथेऽवतारवादश्राद्धमूर्तिपूजादिविषयास्तथा सनातनधर्मविरोधि मुखम्लानकरणायानेकशोविषयास्संपादिता स्सन्ति, नाऽपि सनातनधर्मविरुद्धांशः प्रतीयते, यद्यपि बहुषु स्थलेषु विवादग्रस्त इव दृष्टिपथे पथिकायते विवादिनां, तथाऽपि बहूपकरिष्यत्ययं निवन्ध इति प्रमाणीकरोति।

अर्थ—श्रीस्वामी गंगेश्वरानंदजी के वनाये श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रंथ में अवतारवाद, श्राद्ध, प्रतिमापूजा, आदि सनातनधर्म के प्रधान विषय, तथा सनातनधर्म के विरोधिदल का मुंह फीका करने के लिये सैकड़ों ही अन्य विषय भरे पड़े हैं। इसमें सनातनधर्म के विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखा है। यद्यपि विपक्षियों को बहुतस्थलों में विवादग्रस्तत्त्व का आभास प्रतीत होता है, तथापि सनातनधर्मका इस पुस्तक से बहुत उपकार होगा।

पं० अयोध्याप्रसाद शर्मा,
व्याकरणाचार्य संस्कृतपाठशाला प्रधानाध्यापक;
डुमरीस्टेट, गोरखपुर। २३।९।३३

१३९—श्रौतमुनिचरितामृतग्रंथोऽतीवसर्वेषां रुचिकरस्तथा सनातनधर्मविषयकमूर्त्तिपूजादिरपि तत्रत्योऽतीवनिपुणतया प्रतिपादितोऽतोग्राह्योऽयं ग्रन्थः सर्वैस्सनातनधर्मावलंबिभिरिति प्रमाणयति ।

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ सबके लिये अत्यन्त रुचिकर है, इस ग्रंथ में सनातनधर्मविषयक मूर्तिपूजादि का सम्यक् प्रतिपादन है। इसलिये यह ग्रंथ सनातनधर्मियों को अवश्य लेना चाहिये ।

श्री पं. देवनन्दन शर्मोपाध्याय,
व्याकरण आ० व्याकरण पोष्टाचार्य, साहित्यतीर्थ,
श्रीदामोदर सं० पा० अजमतगढ़ स्टेट, आजमगढ़ ।

१४०—सम्मतिरत्रार्थेममाऽपि ।

श्री पं० रामकिशोर पाण्डेय,
व्याकरणायुर्वेदाचार्य; वेत्मीसंस्कृतपाठशाला-
प्रधानाध्यापक, बरेली ।

१४१—श्रौतमुनिचरितामृतनामक पुस्तक मैंने देखा, इसमें सनातनधर्म के प्रधान सिद्धान्त अवतारवाद मूर्त्तिपूजादि विषयों के मण्डन के साथ २ सनातनधर्म के आचार्यों के गौरवान्वित जीवनचरित्र भी दिये हैं, इसलिये मेरे विचार में प्रत्येक सनातनधर्मी गृहस्थ तथा साधु महात्माओं को यह पुस्तक अवश्य ही पढ़ना चाहिये ।

श्री पं० भरतराम शर्मा,
आ० शु० ११ सं० १९९० श्रीवृन्दावनधाम ।

१४२—श्रौतमुनिचरितामृत नाम का पुस्तक मैंने देखा, इसमें सनातनधर्म के सिद्धान्तों तथा चतुर्थाश्रम का मण्डन बड़े विस्तार से किया

गया है। भगवान् रामानंदाचार्य आदि के जीवन बड़े श्रद्धापूर्ण शब्दों में लिखे गये हैं। सब साधु महात्माओं को मैं इस पुस्तक के अवलोकन की प्रार्थना करता हूं। पुस्तक में सब बातें बड़ी युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणों से प्रतिपादित की गई हैं।

पं० राघवदास चतुर्भुजी,
श्रीवैष्णव श्रीरामानन्दविद्यालयाध्यक्ष, श्रीवृन्दावनधाम।

१४३—श्रौतमुनिचरितामृतनामक ग्रन्थ को मैंने अवलोकन किया, तो इसको सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं पाया, प्रत्युत सनातनधर्म का प्रतिपादक है।

श्री पं० गौरगोपालजी शास्त्री,
भा० कृ० ४—१९९० श्रीवृन्दावनधाम।

१४४—अयमनुभवोऽस्माकम्, यदयंस्वतंत्रवैदिकसिद्धान्त विषयालोचनको ग्रन्थः स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दप्रणीतः श्रीसनातनधर्मानुयायिनां भगवद्विद्वेषिविद्वेषतत्पराणां तनुमनोधनैः समर्पितनिखिलकर्मकलापानां संसारदुःखानलसंतापरूपप्रत्यूहव्यूहसंच्छेदनार्थमहर्निशं प्रयतमानानां कृते महानुपयोगीति प्रमाणीकरोति।

अर्थ—स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी का बनाया तत्त्वभरा आलोचनात्मक ग्रन्थ भगवद्द्रोहियों के मुखभङ्गार्थ दिन रात कमर कस कर तन मन धन से प्रयत्नशील, जनता के दुःखसमूह को छेदन करने के लिये उद्योगशील सहानुभावों के लिये अति उपयोगी है।

श्रीरामशिरोमणि,
व्याकरणाचार्य धर्मशास्त्रशास्त्री भोलानाथसंस्कृतपाठशालाध्यापकः, जौनपुर। ता० १६।९।३३

१४५—श्रीमद्गंगेश्वरानंदविरचितं श्रौतमुनिचरितामृतं संवीक्ष्य नितरां प्रसन्ना वयम्। यतः सनातनधर्मानुयायिनां परमोपकारकोऽयं ग्रन्थः, नात्र सनातनधर्मविरुद्धवार्त्तागंधलेशोऽपि, इति प्रमाणी करोति।

अर्थ—स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी के बनाये श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थको देखकर हम बड़े प्रसन्न हुए, क्योंकि यह पुस्तक सनातनधर्मी जनता का बड़ा उपकारक है, इसमें सनातनधर्म के विरुद्ध किञ्चिन्मात्र भी नहीं है।

पं० शिवशरणशास्त्री सनातनधर्म सं० पाठशाला,
व्याकरणाध्यापकः, आजमगढ़।

१४६—स्वामि श्रीगंगेश्वरानंदविरचितश्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थावलोकनेन सनातनधर्मपोषका एव विषयास्सन्तीति प्रमाणीकरोति।

अर्थ—स्वामि गङ्गेश्वरानन्दजी के बनाये श्रौतमुनिचरितामृत को देखने से मालूम हुआ कि इसमें सनातनधर्म के विषयों का अद्वितीय वर्णन है।

पं० शक्तिधर झा व्या. आचार्य धर्मशास्त्री
सवजजीकोर्ट, जयपुर सिटी।

१४७—स्वामि गंगेश्वरानंदजी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ सनातनधर्मानुकूल है।

ह० महन्तगोपालदास जी लश्करवाले (श्रीवैष्णव)
गोविन्दकुंड, वृन्दावनधाम।

१४८—ह० महन्त जगदेवदास जी
मु० गढ़ीहोडलकी जि० गुडगाँव

१४९—श्रीश्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थं समालोक्य महान् प्रमोदः संजातः, यतः समीचीनरीत्या सनातनधर्ममूर्त्तिपूजादिविषया वर्त्तन्त इति सम्मन्वते।

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृत को देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुयी, क्योंकि सनातनधर्म के मुख्य विषय मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि का सम्यग् प्रतिपादक है, ऐसा मैं प्रमाणित करता हूँ।

पं० श्रीरामकुमार शास्त्री, व्या० आ० आ० आ०
साहि० आ० न्या० रत्न व्या० अलंकार विद्यालंकार
श्रीद्वारिकाधीश सं० पाठशालाप्रधानाध्यापक, कानपुर।

१५०—श्री सनातनधर्मो विजयतेतराम्

वेददर्शनाचार्य श्रीमदुदासीन मण्डलीश्वर श्रीस्वामिगङ्गेश्वरानन्दजीके बनाये इस "श्रौतमुनिचरितामृत" नामक पुस्तक में सनातनधर्म के विरुद्ध एक पद भी नहीं, नाहीं किसी धर्माचार्य पर कोई आक्षेप है। प्रत्युत इस ग्रन्थ में सनातनधर्म के प्राणभूत (प्रधानअङ्ग) व्रत और तीर्थों का माहात्म्य—वर्णाश्रमव्यवस्था-श्राद्ध-मूर्त्तिपूजा-भगवदवतारादि समस्त विषयों का वैदिकप्रमाणों से सयुक्तिक समर्थन किया गया है, और प्रायः सभी प्रसिद्ध साधु सम्प्रदायों के आचार्यों का संक्षिप्त जीवन, एवं बड़ी प्रशंसा की गई है। हां ग्रन्थकर्त्ता ने अपनी सनकादिप्रवर्त्तित श्रौतउदासीन सम्प्रदायका उत्कर्ष वर्णन अवश्य किया है। परन्तु वह सनातनधर्म

के विरुद्ध या किसी धर्माचार्य पर आक्षेप नहीं कहा जा सकता, ऐसा सभी करते हैं।

इस ग्रन्थ के लेखक सनातनधर्म के प्रवल प्रचारक हैं, और यह ग्रन्थ धार्मिकेतिहास जिज्ञासुवों के लिये नितान्त उपकारक सिद्ध होगा।

श्री जयचंद्र रायसाहेव आनरेरी मजिस्ट्रेट
म्यूनिसपल कमिश्नर रावलपिंडी।

१५१—एस० डी० राय साहव रावलपिंडी।

१५२—राय साहेव जौहरी त्रिपाठी रावलपिंडी।

१५३—रामेश्वर दिवालिया मेंबर शिवालयकमेटी रावलपिंडी।

१५४—श्रीदुर्गादास ,, ,, रावलपिंडी।

१५५—श्रीजगन्नाथ भार्गव मैनेजर हीरालाल गोपीचंद खजानची तोपखाना रावलपिंडी।

१५६—श्रीमद्गंगेश्वरानन्दविरचितं श्रौतमुनिचरितामृत्तं सनातनधर्मानुयायिनः परमोपकारमातनोति।

अर्थः—स्वामि गंगेश्वरानन्दजी का वनाया हुआ यह श्रौतमुनि चरितामृतग्रंथ सनातनधर्म का बड़ा उपकार करता है।

पं० नर्मदेश्वर शास्त्री
गणपतरायखेमकासंस्कृत-विद्यालय
प्रधानाध्यापक, काशी।

१५७—श्रीसनातनधर्मो विजयतेतराम्

वेददर्शनाचार्य श्रीमदुदासीनवर्य मंडलीश्वर स्वामि श्रीगंगेश्वरानन्दविरचितेऽस्मिन् "श्रौतमुनिचरितामृत" नाम्नि पुस्तके सनातनधर्मसिद्धान्तप्रतिकूलं पदमेकमपि नो लभ्यते, नाऽपि कश्चिद्धर्माचार्य आक्षिप्तो वर्त्तते, अपि तु सर्वेषां सनातनधर्मप्राणभूतानां व्रततीर्थ, माहात्म्य, वर्णाश्रमव्यवस्था, श्राद्ध, मूर्तिपूजा, भगवदवतारादिविषयाणां वैदिकप्रमाणैः सोपपत्तिप्रतिपादनम्, समेषां च धर्माचार्याणां संक्षिप्तजीवनवृत्तान्तोपन्यासपुरस्सरं भूरिप्रशंसनं वरीवृत्यते, लेखकैःस्वकीय श्रौतोदासीनसम्प्रदायस्योत्कर्षस्त्वत्र वर्णितः, परं तत्र सनातनधर्मं विरुणद्धि, नापि कञ्चिदाचार्यमाक्षिपति, किं चैतन्निबंधनिर्माता सनातनधर्मस्य प्रचण्डप्रचारकः निबन्धश्चायं धार्मिकेतिहासजिज्ञासूनां महतीमुपकृतिमाधास्यतीति सम्मनुते ।

अर्थ—वेददर्शनाचार्य, उदासीनवर्य, मंडलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्दजी के बनाये श्रौतमुनिचरितामृत नामक पुस्तक में सनातनधर्म के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं मिलता और न किसी धर्माचार्य पर आक्षेप किया गया है । प्रत्युत सनातनधर्म के प्राणभूत व्रततीर्थ आदि का माहात्म्य, वर्णाश्रम की व्यवस्था. श्राद्ध, मूर्तिपूजा अवतार आदि सब विषयों का वैदिक प्रमाणों द्वारा तथा अकाट्य युक्तियों द्वारा प्रतिपादन किया गया है । सब धर्माचार्यों के जीवनचरित्र को लिखते हुए उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की गई है । लेखक महोदय ने इसमें अपने श्रौत उदासीन संप्रदाय का उत्कर्ष तो अवश्य दिखलाया है, परन्तु इससे सना-

तनधर्म की हानि नहीं कही जा सकती, और न इससे किसी धर्माचार्य पर आक्षेप सिद्ध हो सकता है । इस ग्रंथ के निर्माता स्वामीजी तो सनातनधर्म के एक अद्वितीय प्रचारक हैं । इसलिये उनका बनाया यह ग्रंथ धार्मिक इतिहास के जिज्ञासुओं के लिये बड़ा उपकारक है, यह मैं प्रमाणित करता हूँ ।

पं० श्रीकृष्णशास्त्री व्याख्यानकेसरी,
पंचनदप्रान्तीयसनातनधर्मोपदेशक,
मण्डलप्रधान, लाहौर । भा० कृ० २-१९९०

१५८—श्रीयुत उदासीन प्रवर, वेददर्शनाचार्य, स्वामी गंगेश्वरानन्दजी मण्डलेश्वर विरचित श्रौतमुनिचरितामृतनामक ग्रन्थ तीर्थमाहात्म्य, व्रतमाहात्म्य, मृतपितरों का श्राद्ध, मूर्तिपूजा, वर्णव्यवस्था, नाममाहात्म्य, ईश्वरावतार आदि सनातनसिद्धान्तों के मण्डन से भरा पड़ा है । अत एव ऐसा लिखने में कोई संकोच नहीं कि यह ग्रन्थ सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं, अपि तु अनुकूल ही है । अभी हमने इसके कई स्थल देखे हैं जिनसे ग्रन्थकार के पाण्डित्य का पूर्ण परिचय मिल जाता है । इस ग्रन्थके लेखक स्वामीजी गुजरात, काठियावाड़, सिंध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त, आदि प्रसिद्ध प्रान्तों में अपने अलौकिक भाषण से पर्याप्तख्याति प्राप्त कर चुके हैं । आपकी भाषणशैली बड़ी मधुर तथा सारगर्भित रहती है । सहस्रों मनुष्य आपके सदुपदेशों से सनातनधर्म

क सेवक बन चुके हैं, इसलिये धर्म जिज्ञासुमात्र को इस ग्रन्थसे लाभ उठाना चाहिये।

ह. पं० श्रीयदुकुलभूषण शर्मा व्याख्यानदिवाकर,
स्थानापन्न प्रधान सनातनधर्मप्रतिनिधिमहासभा,
कार्य क्षेत्र—पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त, काश्मीर,
कार्यालय-रावलपिंडी।

१५९—श्रीमान् गोस्वामी यदुकुलभूषणजी से मेरा विशेष परिचय है, आपकी लिखी व्यवस्था से मैं भी सहमत हूँ।

ह० श्रीरामचन्द्रलाल आनरेरीमजिस्ट्रेट,
दर्जादोयम—रावलपिंडी।

१६०—श्रीसनातनधर्मो विजयतेतराम्।

वेददर्शनाचार्य श्रीमदुदासीनमंडलीश्वर स्वामि श्रीगंगेश्वरानंदजी के बनाये इस श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथमें सनातनधर्म के विरुद्ध एक पद भी नहीं, नहीं किसी धर्माचार्य पर कोई आक्षेप है। प्रत्युत इस ग्रन्थमें सनातनधर्मके प्राणस्वरूप व्रत और तीर्थों का माहात्म्य, वर्णाश्रम व्यवस्था, श्राद्ध, मूर्त्तिपूजा, भगवदवतारादि समस्तविषयों का वैदिक प्रमाणों से सयुक्तिक समर्थन किया गया है। और प्रायः सभी प्रसिद्ध साधु संप्रदायों के आचार्यों का संक्षिप्त जीवन एवं बड़ी प्रशंसा की गई है। हाँ ग्रन्थकर्ता ने अपने श्रौतउदासीनसंप्रदाय का उत्कर्ष वर्णन अवश्य किया है,

परन्तु वह सनातनधर्म का विरोध या किसी धर्माचार्य पर आक्षेप नहीं कहा जा सकता। ऐसा प्रायः सभी करते हैं। इस ग्रन्थ के लेखक सनातनधर्म के प्रबलप्रचारक हैं, और यह ग्रन्थ धार्मिक इतिहास के जिज्ञासुओं का नितान्त उपकारक है।

दियालशरण सेक्रेटरी
दी जुग्गीस्ट्रीट हिन्दू ऐसोसियेशन, रावलपिंडी।

१६१—यतोधर्मस्ततोजयः।

वेद दर्शनाचार्य श्रीमदुदासीनवर्य श्रीस्वामि गंगेश्वरानंदविरचित श्रौतमुनिचरितामृताभिधानोऽयं सन्दर्भः, वेदपुराणादिप्रतिपादितश्रीसनातनधर्मप्राणभूतवर्णाश्रमव्यवस्था, तीर्थव्रतमाहात्म्य, पितृश्राद्ध, अष्टविधप्रतिमापूजनधर्मविरोधिदुष्टदलदलनार्थभगवदवतारादिविषयाणां विशदरीत्या प्रतिपादकोऽस्ति। उदासीनसंप्रदायस्य तु परममहत्त्वमत्रवर्णितं दृश्यते, तच्चास्य संदर्भस्य प्रधानभूतोविषयः। परं तत्राऽपि न केनाऽपि सनातनधर्मसिद्धान्तेन विरोधः प्रदर्शित इतिमन्यते।

अर्थ—वेददर्शनाचार्य, उदासीनवर्य, स्वामि गंगेश्वरानन्दजी महाराज का बनाया श्रौतमुनिचरितामृत ग्रंथ, वेद तथा पुराणों से प्रतिपादित, श्रीसनातनधर्म के प्राणभूत, वर्णाश्रमव्यवस्था, तीर्थ व्रत माहात्म्य, पितृश्राद्ध, अष्टविधप्रतिमापूजन, धर्मद्रोहि दुष्टसमूह को नष्ट करने के लिये हुए, भगवान् के अवतारों का वर्णन, इत्यादि नानाविध विषयों का बड़ी सरल रीति से प्रतिपादक है। इस ग्रंथमें उदासीन संप्रदाय का उत्कर्ष दिखाया, अपनी संप्रदाय में नवजीवन संचार करते हुए उसे उन्नत बनाना (जो कि प्रत्येक संप्रदायवाले

प्राणिमात्र का धर्म है) इस ग्रन्थ का प्रधान उद्‌देश्य है। पर उसमें श्री सनातनधर्म के नियमों के विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखा है। अतः यह ग्रन्थ सनातनधर्मियों का आदरणीय है, यह मैं मानता हूं।

भारतधर्ममहामंडलतो लब्ध महोपदेशक पदवीकः,

श्रीजगन्नाथ श्रीकण्ठशास्त्री।

१६२–श्रीस्वामी गङ्गेश्वरानंदजी का बनाया यह श्रौतमुनि चरितामृत हम सबने पढ़ा, उसमें सबविषय सनातनधर्म के पूर्णतया प्रतिपादकही मिले। स्वामी गंगेश्वरानंद जी सनातनधर्म के अद्वितीय प्रचारक हैं। श्रीराम बाग में स्वामी जी महाराज ने तीन मास लगातार सनातनधर्म के गूढ़विषयों पर सदुपदेशों द्वारा अमृतवर्षा करते हुए रावलपिंडी की जनता को कृतकृत्य करदिया। श्रीहरिमंदिर की कमेटी के सब सदस्य (हम लोग) सर्वसाधारण से निवेदन करते हैं कि यह पुस्तक सनातनधर्मानुकूल है। इसलिये सनातनधर्मियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये।

श्रीशङ्करदास प्रधान हरिमन्दिर कमेटी, रावलपिंडी

१६३—उपप्रधान पंजाबसिंधक्षेत्र, ऋषिकेश।

श्रीरामकिशन रावलपिंडी

१६४—श्रीबाबा भागसिंहजी वेदी–रावलपिंडी।

१६५—श्रीगोपालदास प्रधान हरिमन्दिर रामकमेटी–रावलपिंडी।

१६६—श्रीमनोहरलाल सेक्रेटरी सनातनधर्म हरिमन्दिर रावलपिंडी।

१६७—फकीरचन्द्र ,, ,, ,, रावलपिंडी

१६८—पं० मायाराम „ „ „ रावलपिंडी
१६९—श्रीविहारीलाल प्रेसिडेण्ट सनातनधर्ममहावीरदल शहर रावलपिंडी
१७०—श्रीरामरक्खामल सेक्रेटरी हरिमन्दिर रामकमेटी रावलपिंडी
१७१—श्रीमूलराज सेठ पेन्शनर रीडर रावलपिंडी

१७२—पूज्यपाद श्रीमंडलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्दजी का बनाया श्रौतमुनिचरितामृतग्रन्थ देखकर उसकी प्रशंसा लिखे वगैर नहीं रह सकता, लेखनी की ताकत से वाहर है कि ऐसे Complete (मुकम्मल) Based on fact reasonable and based on historical research ग्रंथ के बारे में कुछ लिखे। ग्रंथपर आपका शुभनामही Greatest proof हर प्रकार के द्वेष व पार्टीवाजी वालायेताक रक्खा गया है। ग्रंथ हर हिन्दू, सिक्ख, साधु और Students of history के लिये एक रोशनी के मीनार का सा काम देता है। जैसे गहरे समुद्र में लगा रोशनी का मीनार, अन्धेरे में भी रास्ता दिखाकर डूवते हुए जहाजों को बचा लेता है, इसी प्रकार आपका ग्रन्थरूपी यह Research (खोज) भवसागर में डूब रहे प्राणिवर्गरूपी जहाजों को प्रकाश दिखा कर अभिलषित स्थान में पहुँचाने में काफी मदद करता है।

श्रीजगन्नाथ कौशल बी० ए०
इण्डियनस्टेट्सवैंक लिमिटेड
लायलपुर, हेडआफिस, आगरा।

श्रीहरिः शरणम् ।

१७३–हमने वेददर्शनाचार्य श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानंदजीकृत श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ के कतिपय स्थलों का आलोचन किया, तथा कई एक विद्वानों से इसके संबन्ध में विचार भी किया। और समाचारपत्रों में भी पढ़ा, इन सब बातों पर विचार करने के अनन्तर हम इस परिणाम पर पहुँचे कि उक्तग्रन्थ सनातनधर्म के सिद्धान्तों के प्रतिपादन में परम उपयुक्त है। और इस घोर कलिकाल में इस ग्रन्थकारने सैकड़ों ग्रन्थों का पर्यालोचन करने के बाद इस ग्रन्थ को रचकर सनातनधर्म की बड़ी भारी सेवा की है। जिससे सनातनधर्मीमात्र को ग्रन्थकार का हार्दिक कृतज्ञ होना चाहिये।

Diwan Krishnakor
Shiwalaya committeey
Dingikhuhi-Rawalpindi.

१७४—ह० श्री बेलीराम बाली (रायजादा) रावलपिंडी

१७५—मैनेजर श्री शिवालयकमेटी दीवान कृष्णकौर डिंगी खूही-रावलपिंडी ।

१७६—कार्यालयाध्यक्ष–श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधि महासभा रावलपिंडी

१७७—प्रधानमंत्री हिन्दू सभा सदर रावलपिंडी

१७८—आयव्ययनिरीक्षक श्रीसनातनधर्म सभा रजिस्टर्ड रावलपिंडी

१७९—प्रधान श्री सनातनधर्म धर्मशाला पंचायती मोहल्ला ग्वालमंडी सदर रावलपिंडी

१८०—भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री ऋषिकुलब्रह्मचर्याश्रम कटासराज

१८१—भूतपूर्व प्रधान श्री सनातनधर्मसभा सदर रावलपिंडी

१८२—भूतपूर्व बाजार सुपरिंटेण्डेण्ट सदर रावलपिंडी इत्यादि ।

१८३—श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानंदजी ने अपनी पुस्तक श्रौतमुनिचरितामृत हमारे पास भेजी, हमने उसे यथावकाश तत्तत् स्थलों में देखा, देखकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा, कि यह पुस्तक वास्तव में अमृत का भंडार है, और इसे पढ़कर ज्ञात हुआ कि इसके लेखक एक उच्चकोटि के बड़े धुरन्धर उदासीन विद्वान् हैं । आपने यह पुस्तक लिखकर सनातनधर्म की बड़ी भारी सेवा की है । मुझे रामबागमें आपके भाषण सुननेका भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था, आपकी योग्यता, आपका पाण्डित्य, और धार्मिक प्रेम, जितना सराहा जाय उतना ही थोड़ा है । आपने सनातनधर्म के सिद्धान्तों को केवल अपने जीवनचरित्र द्वारा ही नहीं बल्कि बड़े प्रभावशाली शब्दों में लिखकर सर्वसाधारण के लिये अमृत-कुण्ड का आनन्द लूटने के लिये सुगममार्ग बना दिया है । मैं

आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। कि आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी की अपार कृपा है कि आप जैसे परोपकारी महात्मा इस कठिन समय में भी धर्म की निष्काम भावना से सेवा कर रहे हैं। जिससे हमें अपना जीवन सफल करने का सुअवसर और सौभाग्य प्राप्त होरहा है। भगवान् करे जिन शुभभावों और उद्देश्यों को लेकर आपने यह सत्र प्रयत्न किया है उसकी पूर्त्ति हो।

पं० लक्ष्मीनारायण सूदन
बी० ए० एल० एल० बी० एडवोकेट (वकील)
उपप्रधान सनातनधर्मसभा, रावलपिंडी।
ता० २४-९-३३

१८४-तत्सद् ब्रह्मणे नमः

श्री औतोदासीन संप्रदायकल्पपादपो भगवता विष्णुना हंसवपुषाऽवतीर्य समारोपितः श्रीमत सनत्कुमार नारदप्रभृति मुनिपुंगवैश्च भूयसाऽयासेन सस्नेहं संवर्धितः, अयं च मुनिऋषिसेवकाभिधाभिस्तिस्राभिः शाखाभिरुपेतः– उदासीनशब्दो हि ब्रह्मसंस्थशब्दसमानार्थकत्वात् चतुर्थाश्रमि मुनौ शक्तस्तादृशसनत्कुमारादि प्रचारितवर्णाश्रमधर्मनियमकर्मयोगपंचदेवोपासनादिसिद्धान्तसंदोहमाद्रियमाणेषु तदनुयायिष्वितराश्रमिषु ऋषिसेवकेष्वपि भक्त्या प्रयुज्यते। संप्रदायस्यास्य मुनयश्चतुर्थाश्रमिणः सन्तोऽपि लोकसंग्रहार्थं भगवद् बहुमतं कर्मयोगं स्वयमनुतिष्ठन्तीतरैरनुष्ठापयन्ति च, अतएव

देवराजेन सममेषां सौहार्दम्—तच्च "इन्द्रोमुनीनां सखा, इति मंत्र-वर्णात् स्फुटमवगम्यते ।

कलिकालकवलिततया लुप्तप्रायं चेमं संप्रदायं सुगृहीतनामधे-यानामविनाशिमुनिपादानां शिष्याः श्री श्री चंद्राचार्यचरणाः षोड़श्यां वैक्रमशताब्द्यां पुनरुत्थापयाञ्चक्रिरे । अस्यां च विंशतितम्यां शताब्द्यां तत् संप्रदायशिरोरत्नायमान विद्यादिवाकर भारतभूषण महामहोपाध्याय स्वामि केशवानन्द मुनिमंडल संस्थापकमंडलेश्वर तर्कवागीश स्वामि भोलाराम मंडलेश्वर, वेदान्ताचार्य स्वामि मोहन लाल, निखिलशास्त्रनिष्णात स्वामि वालराममंडलेश्वर, सनातनधर्म मार्त्तण्ड हरिद्वारस्थ श्रीगुरुमंडलाश्रम संस्थापक व्याख्यानवाचस्पति स्वाम्यात्मस्वरूपशास्त्रि मंडलेश्वर, ब्रह्मविद्यामूर्त्ति स्वामि ब्रह्मानंद वीतराग स्वाम्यमरदास प्रमुखा महीयांसो विद्वांसो महामोहविद्राव-णावोधध्वान्तमार्तण्ड श्रौतसर्वस्व गंगास्थित्यादि निवन्धनिर्माण प्रवचनशास्त्रार्थादिभिः परिपंथिनो मुद्रितमुखान् विधाय सनातन-धर्मस्य महतीं सेवां कृतवन्तः ।

साम्प्रतमपि पंडितप्रवर स्वामिहरिप्रकाश, विद्वद्मणी स्वामि परमानंद, वेददर्शनाचार्य स्वामि गंगेश्वरानंद मंडलेश्वर, प्राचीन नवीन न्यायाचार्य स्वामि रत्नदास मंडलेश्वर, विद्याभूषण स्वामी जीवन्मुक्त, वेदान्ताचार्य स्वाम्यसंगानंद, न्यायाचार्य स्वामि वुद्धि-प्रकाश, पुराणभास्कर स्वामिशान्तानंदादयो महानुभावाः पूर्वं पुरुष-

निर्विशेषं सानुरागतां विदधते । अतः संप्रदायस्यैतस्य श्रौतत्त्वे पुरातनत्त्वे वा विप्रतिपत्तिः खपुष्पकल्पतामेवाकलयतीति सम्मन्नुते ।

विद्याभास्कर पदवी प्रतिष्ठितो भार्गवोपाह्वः,

श्रीअमरनाथ शर्मा व्याकरणशास्त्री, स्नातकः—

श्रीऋषिकुलब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वारस्य ।

१८५—भारतधर्म महामंडलतो लब्धमहोपदेशक पदवीकः,

जगन्नाथ श्रीकण्ठ शास्त्री—

१९–९–३३

१८६—श्री गौरकृष्णः शरणम् ।

काश्याम्, आ० व० १३ रवौ

कलियुगजनपावनावतारभक्तजीवजीवातुपरमपुमर्थप्रेमवितरणपरायणभगवच्छ्रीश्रीकृष्णचैतन्यचरणोपदिष्टैकवीथिपथिकश्रीमन्माध्वसंप्रदायाचार्यदार्शनिकसार्वभौमसाहित्यदर्शनाद्याचार्यतर्करत्नन्यायरत्न गोस्वामि श्रीदामोदरलाल शास्त्री ।

श्रौतमुनिचरितामृतनामकनिबन्धमाक्षिप्नूनां विलक्षणमतीनामयथावर्त्तनैर्दूनचेतसमुदासीनत्त्वेनव्यवहृतमुदासीनसंघं प्रतीदमेवास्माकं कथनम्, यत् "अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिमाणावधिगृणन्"नयमेतमनुसृत्य नामान्वर्थतामवलम्बतां भवान् । निर्दिष्ट पुस्तकस्थानेक सनातनधर्मानुसारिसमीचीनांशेषूपादेयतामुत्सिसादयन्नपीतरो न जातुफलेग्रहिर्भविता ।

तन्निबंधस्य द्वितीयसंस्करणावसरे भवत्परिपंथिमुद्रित घोषणाया अन्तेऽस्मन्निर्दिष्ट तज्जातीयान्ये विषया निरसनीया, इत्येव कर्त्तव्यविहितये प्रियम्भावुकं भवन्तमनुरुणद्धि ।

॥ श्रीः ॥

१८७—श्रीमद्गंगेश्वरानन्द श्रौतमुनिप्रणीतं श्रौतमुनिचरितामृतं श्रुतिस्मृतीतिहासाद्यनेकग्रन्थपर्यालोचनजन्य प्रामाणिक नाना मुनिचरितवर्णनोपबृंहितम्, श्रुतिसिद्धश्राद्ध-मूर्त्तिपूजनाद्यनेकोपयुक्त विषयसमर्थनपरमास्तिकानां हृदये प्रमोदवृन्दमाविर्भावयतीति सोल्लासं निगदन्ति ।

अर्थः—स्वामी गंगेश्वरानन्द श्रौतमुनिने श्रुति, स्मृति, इतिहास, आदि अनेक ग्रंथों का पर्यालोचन कर यह श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ बनाया है। जिसमें कि अनेक मुनियों के प्रामाणिक चरित्र वर्णित किये हैं। और यह ग्रन्थ वेदप्रतिपादित श्राद्ध-मूर्त्तिपूजा प्रभृति अनेक उपयुक्त धार्मिक विषयों का समर्थक है, अतएव यह पुस्तक आस्तिक जनता को बड़ा आनन्द देता है, ऐसी हमारी राय है।

१८८—श्री पं० दीनबन्धुशर्मा लक्ष्मीवती विद्यालय प्रधानाध्यापकः मिथिला ।

१८९—श्री पं० मधुसूदन मिश्र लक्ष्मीवतीविद्यालय प्रधानाध्यापकः ।

१९०—श्री पं० जीवनाथ झा व्याकरणाचार्य साहित्यतीर्थः ।

१९१—श्री पं० विष्णुलाल शास्त्री व्या० सा० तीर्थः ।

१९२—श्री पं० बालकृष्ण झा व्या० न्या० आ० काली संस्कृतविद्यालय प्रधानाध्यापकः ।

१९३—श्री पं० लम्बोदर झा व्याकरणाचार्य ।

१९४—श्री पं० भगीरथ शर्मा परमेश्वरीविद्यालय द्वितीयाध्यापकः ।

१९५—श्री पं० गंगाधरशर्मा अखिलदर्शनाध्यापकः ।

१९६—श्री पं० षष्ठीनाथ मिश्रः । शारदाभवन विद्यालयाध्यापकः ।

१९७—श्रौतमुनिचरितामृतनामा ग्रन्थः संन्यासोदासशब्दयोर्विवदमानोऽपि पाण्डित्यप्रचुरपरिकीर्ण इति प्रमाणयति ।

अर्थ—श्रौतमुनिचरितामृतनामा ग्रन्थ संन्यास शब्द तथा उदासीन शब्द के विषय में पौर्वापर्य विचार से विवादद्वारा पाण्डित्य परिपूर्ण है, इस बात को मैं प्रमाणित करता हूं ।

श्रीजनार्दन झा-ठाढ़ी परमेश्वरीविद्यालयस्य
प्रधानाध्यापकः

२९८—उक्तार्थमनुमोदयति श्रीसृष्टिनारायणशर्माऽपि-(वेदान्ताचार्य्यः) ।

१९९—श्रीमद्गङ्गेश्वरानन्द श्रौतमुनिचरितामृतं सनातनधर्मानुकूल मूर्तिपूजाद्यनेकविषयोपबृंहितं स्वमतप्रतिपादने प्रौढतां दर्शयत्सर्वेषामेव विदुषां नव्यार्थप्रदर्शकतया प्रमोदजनकमिति प्रमाणयति।

अर्थ—श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी संपादित श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थमें सनातनधर्मानुकूल मूर्त्तिपूजादि अनेक विषयों का युक्तिपूर्ण प्रतिपादन है। स्वामीजी ने अपने सांप्रदायिक विषयों के प्रतिपादन करने में प्रकाश डालकर भी अपनी प्रौढ़ता का परिचय दिया है, जो कि सभी विद्वानों के लिये हर्ष का कारण है ।

२००—अत्र विषये कृतसंमतिको झंझारपुरस्थ विद्यालय प्रधानाध्यापकः। रविनाथ शर्मा मुरलीधर झा० व्या० आ०

२०१—श्रीमदुदासीन श्रीस्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज ने "श्रौतमुनिचरितामृतम्" पुस्तक लिखकर न केवल भारतवासियों पर उपकार किया है, किन्तु संस्कृत और हिन्दी भाषा पर भी। दुर्भाग्य वश चक्षुहीन होने पर भी पण्डित जी ने अपने आन्तरिक ज्ञान व दूरदृष्टि से वह सत्य उपदेश दिया है, जो बहुत सी आँखें रखने वालों के लिये साधारण बात न थी। उदासीन संप्रदाय के साधु धर्मविद्या का प्रचार नहीं करते, इस कथन को झूँठा कर दिया। और संन्यासाश्रम (उदासीन सम्प्रदाय) जैसे गम्भीर विषय के विवेक को सरल हिन्दी भाषा में प्रगट किया है।

यह पुस्तक चतुर्थ आश्रम संन्यास (औदासीन्य) के अटल नियम का तत्त्वज्ञान है। संन्यासधर्म (औदासीन्य धर्म) की महिमा और संन्यासियों (उदासीनों) की आवश्यकता को भारतीय इतिहास के वास्तविक घटनाओं से श्रुति स्मृति और उपनिषद द्वारा भली भाँति प्रमाणित किया है। इसमें किसी अन्य धर्मावलम्बियों पर आक्षेप नहीं है, इस लिये किसी और सम्प्रदाय या मत को विरोध न करना चाहिये। वस्तुतः सनातनधर्म के मुख्य नियमों मूर्तिपूजा श्राद्ध अवतार और मुक्ति वगैरह की सहानुभूति की है। इस लिये सनातनधर्मी भाइयों के विरोध का कोई कारण नहीं पाया जाता।

सारांशः—यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है-धर्म आसक्त इसको अवश्य पढ़ेंगे।

PANDOJI RAO DHAGE, M. A. B. L.
Vakil, High Court,
RIKAB GANJ, HYDERABAD. (Deccan)
Date. 3th. Sept. 1933.

२०२—मैंने मण्डलेश्वर श्री स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी कृत "श्रौतमुनिचरितामृत" पुस्तक को पढ़ा है, मेरी राय में इस किताब में सनातनधर्म के विरुद्ध कोई ऐसी बात नहीं लिखी गई है, जिससे कि किसी को भी विप्रतिपत्ति हो सकती हो, जिस व्यक्ति को गुरु श्रीचन्द्रजी महाराज पर विश्वास या ऐतक़ाद है, वो उनको जगद्गुरु मानने का हक़ या अधिकार रख सकते हैं। इस तरह किसी के मानने से किसी भी धर्म पर कोई आक्षेप नहीं हो सकता, यह अपने २ विश्वास पर निर्भर है—

ह० नारायणदत्त।

Dr. NARAIN DATTA A. V. A. (Kang)
Eye Specialist (Bombay)
Physian & Dental Surgeon.

Near Impirial Bank
Hydrabad Deccan
Dated. 31/9/1933.

२०३—"श्रौतमुनिचरितामृत" को आद्योपान्त पढ़ने से ज्ञात होता है कि इसके लेखक उदासीन महात्मा पं० गङ्गेश्वरानन्द जी वेददर्शनाचार्य सनातनधर्मशास्त्र के प्रकाण्डपण्डित नीति-शास्त्र के धुरन्धर विद्वान् वर्तमान सुज्ञपथप्रदर्शक और उदासीन संप्रदाय के जगमगाते सितारे हैं। पुस्तक में सनातनधर्म का भलीभाँति प्रतिपादन किया गया है, साथ ही धर्मनीति पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। उदासीन संप्रदाय सृष्टि के आरम्भ-काल से प्रचलित है, इसे सिद्धकरने के लिये हमारे माननीय श्रुति-स्मृति इतिहास पुराणादि शास्त्र तथा रामायण श्रीभागवतादि सभी धार्मिकशास्त्रों के अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। महात्माजी ने 'गागर में सागर, की कहावत को चरितार्थ करने की चेष्टा की है। वस्तुतः सृष्टिक्रमके आरम्भ से सनकादिक उदासीनधर्म धारण का स्पष्टीकरण यथा क्रम देव और देवऋषियों इन्द्रादि देवताओं का अभ्युत्थानक विषय परमात्मा का साकार निरूपण, पुरुषोत्तमभगवान् श्रीरामचन्द्र लीलापु०भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का अवतार, मूर्त्तिपूजादि सिद्धि, श्राद्धकर्ममण्डन, मातृ पितृ भक्ति, गुरु आदि की अनन्योपासना, आदि विविध विषय सनातनधर्म प्राण जनता के असीम आनन्द श्रद्धा, भक्ति, रुचि के कारण हैं। अतः प्रत्येक शिखासूत्र धारी, नहीं, नहीं प्रत्येक स्वाभिमानी हिन्दूनामधारी अधिकारी के प्रति अनुरोध करता हूँ

कि उक्त पुस्तक को सप्रेम पढ़कर धार्मिक लाभ उठाकर हृदय को शान्त करें। मैं लेखकमहानुभाव को धन्यवाद देकर प्रार्थना करता हूँ कि इसी भाँति धर्म के पोषक और देश जाति को जगाने वाले लेख भविष्य में भी लिखने की कृपा करते रहें। परिशिष्ट में मेरा अनुमान है कि सनातनधर्मी जनता इस पुस्तक से अवश्य आनन्द प्राप्त करेगी, परन्तु दुराग्रही और क्रूरात्मा पुरुष इसके प्रवाहों के गह्वर तरङ्गों में डूब जायँगे। ईश्वर प्राणी-मात्र का कल्याण करें।

श्री पं० राधाकृष्णजी व्या० न्या० आ०।

२०४—वैद्यराज श्री पं० रामकृष्ण शर्मा; रामकृष्ण फार्मेसी, उर्दू शरीफ, हैदराबाद दक्षिण।

२०५—श्रीमान् स्वामी गङ्गेश्वरानन्द जी विरचित श्रौतमुनि-चरितामृतनामक पुस्तक देखा, मेरे विचार से इसमें कोई बात सनातनधर्म के सिद्धान्त के प्रतिकूल नहीं है, क्योंकि सामान्यतौर-पर निम्नलिखित सिद्धान्तों के मानने से मनुष्य या समाज सना-तनधर्मी कहलाता है।

१—वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, और अनादि अनन्त जानना।

२—पुनर्जन्म के साथ साथ स्वर्ग और नरक के अस्तित्त्व को मानना।

३—अवतारों को मानना तथा इस परम्पराको अनन्त मानना।

४—देवताओं और पितृओं का अस्तित्त्व मानना।

५—मूर्त्तिपूजा, श्राद्ध और तीर्थों में श्रद्धा रखना।

उपरोक्त पुस्तक में इन सब विषयों का प्रतिपादन किया गया है। इसलिये यह पुस्तक सनातनधर्म के अनुकूल है। अब तलक जनता में यह भ्रम फैला हुआ था कि उदासीन संप्रदाय अवैदिक है। परन्तु श्रीमान् गंगेश्वरानन्दजी ने अच्छी तरह से यह भ्रम दूर करके यह सिद्ध कर दिया कि—उदासीन संप्रदाय वैदिक सम्प्रदाय है। इसलिये सब सनातनधर्मियों को आनन्दित होना चाहिये।

श्रीमान् स्वामीजी का यह प्रयत्न बहुत ही धन्यवाद के योग्य है। श्रीगुरु श्रीचन्द्रजी महाराज को जगद्गुरु लिखने में कोई बुराई नहीं है। क्योंकि सब आर्य और अनार्य संप्रदायवाले अपने आचार्य को जगद्गुरु लिखते हैं। इससे जगत् की कोई हानि नहीं है। किसीको जगद्गुरु मानना किसी को न मानना यह प्रत्येक मनुष्य की श्रद्धा का विषय है। सनातनधर्म के सिद्धान्तों से इसका कोई संबन्ध नहीं।

आ० शु० ६ सोमवार

माधवलाल छगनलाल पंड्या
हैदराबाद दक्षिण।

॥ श्री हरिः ॥

२०६—प्रभो ! सचमुच यह सनातनधर्मियों का परम सौभाग्य है, कि जो आपके समानपूज्य महात्मा साधु इस विकराल कलिकाल के अन्धकार पूर्ण समय में भी अपना कर्त्तव्य पालन करते हुवे, हम सांसारिक जीवों का कल्याण कर रहे हैं। वर्त्तमान समय में ऐसे परोपकारी साधु बहुत कम संख्या में प्राप्त होते हैं। जो कि (साध्नोति परकार्यमिति साधुः) इस लक्षण को सफलता पूर्वक निभाते हों। परमपूज्य स्वामी जी नें श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ लिख कर न केवल उदासीन सम्प्रदाय का मुख उज्वल किया है वल्कि सनातनधर्म को गौरवान्वित करते हुवे उसकी विजय वैजयन्ती को संसार के सन्मुख उपस्थित किया है। पूज्य स्वामीजी की परम विद्वत्ता और प्रकाण्ड पाण्डित्य एवं सनातनधर्म में अगाध श्रद्धा उपरोक्त के अवलोकन से भली भांति अनुभव की जा सक्ती है। जगदीश्वर से प्रार्थना है कि पूज्य स्वामीजी इसी प्रकार सनातनधर्म का प्रचार करते हुवे चिरंजीवी हों।

भवदीय—हरिनारायण शर्म्मा मन्त्री
श्रीसनातनधर्मसभा
बेगम बाज़ार, हैदराबाद दक्षिण।
मि० आश्विन शु० ७ सं० १९९०

॥ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

२०७—हमको उदासीन सम्प्रदायीमहात्माओं से ज्ञात है, और श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तक देखने से भी स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह पुस्तक सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं वल्कि अनुकूल है, इस में सनातनधर्मप्राण हिन्दुजनता के लिये साकारनिरूपण, मूर्त्ति-पूजा, श्राद्धमण्डनादि विविध विषय गौरव की सामग्री है। मैं इस पुस्तक का समर्थन मुक्तकण्ठ से करता हूँ और प्रत्येक सनातनधर्मी पुरुष इसका अनुमोदन करेगा।

हस्ताक्षर, महन्त रणछोड़दास जी वैष्णव,
मन्दिर नृसिंहजी हैदराबाद, दक्षिण।

२०८—महन्त भगवान् दास जी वैष्णव जि० वीड़।

॥ श्री हरिः ॥

२०९–श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तक देखने से मालूम हुवा है कि सनातनधर्म के लिये यह वस्तु उत्तम है, इसमें कोई शव्द सनातन-धर्म के विरुद्ध नहीं है। गुरुजनों के भक्ति की रक्षा करने का अच्छा मार्ग वतलाया है। मैं हर एक सनातनीभाई से प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ें और अमल करें। इसके रच-यिता स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी उदासीन को धन्यवाद देता हूँ।

लाला निरंजनलालजी श्रीजगन्नाथमन्दिर
राजा वद्रीप्रसाद सोहनलाल,
कोतागली है० द०

२१०—समर्थनपत्रम्
श्रीकान्यकुब्ज नवयुवक सभा
हैदराबाद, दक्षिणप्रान्त

मि० आश्विनशुक्ल २
सं० १९९० गुरुवार

श्रीमान् स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज मंडलीश्वर विरचित श्रौतमुनिचरितामृत ग्रन्थ के प्रतिपादित विषयों का हमने आलोचन किया। इसमें सनातनधर्म के सिद्धान्तों का प्रबल मंडन मिलता है। जिससे ग्रन्थ स्वयमेव "यथा नाम तथा गुणः" प्रमाणित होता है।

ग्रन्थकर्त्ता ने पूर्णश्रद्धा से तीर्थमहिमा, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, वर्णव्यवस्था, ईश्वरावतार, आदि सिद्धान्तों को अनेक प्रमाणों द्वारा प्रौढ एवं पुष्ट किया है। इससे न केवल उदासीन संप्रदाय, अपितु सनातनधर्मी भी स्वामी जी के ऋणी हैं।

ऐसे तो संसार में "वीतरागजन्मादर्शनात्" के प्रमाणानुसार रागद्वेषादि का चक्र तो चलता ही है, परन्तु ग्रन्थ के मुख्यभाव पर ध्यान देने से "सुषुप्तस्य स्वप्नादर्शने क्लेशाभावादपवर्गः" के अनुकूल अन्य महानुभावों का विरोध शीघ्र ही दूर हो जायगा। अस्तु इस ग्रन्थ के समर्थन में लेखनी उठाना यथार्थ में 'दिवाकर के आगे दीपक बतलाना है'। तथापि संक्षिप्त में यह कहना अनुचित न होगा कि "श्रौतमुनिचरितामृत" ग्रन्थ हिन्दूजाति का जीर्णोद्धार एवं सनातनधर्मियों के मनको प्रफुल्लित कर रहा है। यथा—

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति ।
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ॥
नाऽभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति ।
सन्तः स्वयं परहिते सुकृताभियोगाः ।

अन्त में प्रत्येक सनातनधर्मावलंबियों से निवेदन है कि श्रौत-मुनिचरितामृत को अवश्य पढ़ें । ॐ शान्तिः ।

पं० भवानीप्रसाद मिश्र
प्रधानमंत्री श्रीकान्यकुब्ज नवयुवक सभा–
हैदराबाद, दक्षिणप्रान्त ।

२११—सत्यनारायणप्रसाद मिश्र,
प्रबंधक सभा हैदराबाद, दक्षिणप्रान्त ।

॥ श्री जगन्नाथो जयति ॥

२१२—मुझे बहुतवार उदासीन महात्माओं से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है । और कुम्भ स्नान के अवसरपर तो प्रायः सत्संग होता ही रहता है । उनके वार्त्तालाप और विचारों से तथा उदासीन महात्मा पं० गङ्गेश्वरानन्दजी के बनाये (श्रौतमुनिचरितामृत) नामक पुस्तक देखने से स्पष्ट है कि यह पुस्तक सनातन-धर्म के अनुकूल है । इसमें सनातनधर्म के विरुद्ध कुछ नहीं लिखा है, बल्कि यह पुस्तक सनातनधर्म की उन्नति की सामग्री है, संसार में जितनी सम्प्रदायें विद्यमान हैं उन्हों ने अपने २ पथ

प्रदर्शक गुरुजनों को भगवान् का दरजा दिया है। वास्तव में यह ठीक है।

महन्त वालमुकुन्द दास वैष्णव (जगन्नाथद्वारा)
इमलनिन, चादरघाट, है० द०

२१३—उपरोक्त मैं स्वीकार करता हूँ।

द० म० माधवदास वैष्णव

॥ श्रीः ॥

२१४—श्रौतमुनिचरितामृत नामक ग्रन्थ को आद्योपान्त मैंने देखा, जिसको कि श्रीमान् पण्डितवर गङ्गेश्वरानन्दजी उदासीन उपदेशक सनातनधर्म ने अपने मुख से वेदशास्त्र, पौराणमतानुसार उनका सारलेकर वड़े परिश्रम से निर्माण किया है। इस ग्रन्थ में कोई विषय स० धर्मके विरुद्ध नहीं है। जैसे कि श्राद्धविषय, मूर्त्ति-पूजन और अवतारविषयादिक में कोई शव्द उपघातक के नहीं हैं।

किमधिकमिति ह० देवकीनन्दन शर्मा काशीप्रान्तस्थ
दालमुका, हैदरावाद।

॥ श्रीः ॥

२१५—'श्रौतमुनिचरितामृत, ग्रन्थ, विरचित श्रीमदुदासीन स्वामी पण्डित गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज मण्डलीश्वर का मैंने अवलोकन किया, इस ग्रन्थ में सनातनधर्म के जिन गूढ रहस्यों को वेदशास्त्र पुराण के प्रमाणद्वारा उद्धृत किया है। वास्तव में श्लाघायोग्य है! सत्य तो यह है कि सनातनधर्म पर आनेवाले

अन्धकार आक्षेपों को हटाने के लिये यह ग्रन्थ दिनेशशक्ति रखता है। ग्रन्थ का कोई भी अक्षर सनातनधर्म के विरोध में नहीं है। मेरे विचार में इस ग्रन्थ के प्रतिपादित विषय मानव समाज के हितकर और सनातनधर्मियों पर बृहत उपकार कर रहे हैं। इति शुभम्—

मि० आश्विन शुक्ल ३ सं० १९९०
पं० रामलाल शुक्ल
इलाखे राजाराज्यपान राजर्षिशिवराज धर्मवन्तबहादुर,
वैकुण्ठ-बाहरि।

२१६—उदासीनधर्मधारी अनेक साधु विद्वानों के समागम के पश्चात् प्रयागराज कुम्भ में साधुमेला के प्रधान महात्मा महंत हरिनामदासजी से भेंट हुई। उनके कई ग्रन्थोंका अवलोकन किया, और भी कई पुस्तकें इस संप्रदाय की देखने में आई हैं। परन्तु उदासीन पं० गङ्गेश्वरानन्दजी संग्रहीत पुस्तक श्रौतमुनिचरितामृत उन सबसे अद्भुत है। यह पुस्तक साक्षात् रूपेण सनातनधर्म की वाङ्मयीमूर्त्ति है। पुस्तक के प्रमाण माननीय हैं। उदासीन सृष्टि के आरम्भकालसे प्रचलित हैं। इसके प्रादुर्भाव को हमारे पूज्य सनकादि, वशिष्ठ, भरद्वाज, गौतम, याज्ञवल्क्य, लोमश, अंगिरा, नारदादि, पूर्वज और सायनाचार्य स्वामी शंकराचार्य प्रभृति, ऋषि महर्षिगण और अधिक क्या विश्व नियन्ता के अवतार मर्यादापुरुषोत्तमभगवान् श्रीरामचन्द्र, वृजविहारी लीलापुरुषोत्तम, श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने भी उदासीनमहत्व को अपनाया है। इसके असंख्य प्रमाण हमारे माननीय ग्रन्थों में उपस्थित हैं।

तदुपरान्त अगणित उच्चात्मायें जयमुनि, अविनाशीमुनि, अलिमत्तमुनि, गुरुश्रीचन्द्रयति निर्वाणप्रियतमदास, भगवान् वनखण्डी, श्रीकेशवानन्दादि के स्वरूप में आये, इन्हों ने संसार के कल्याणार्थ अनेकानेक वाणियों से उदासीन भगवद् रूपका दिग्दर्शन कराया है। उनके प्रति हम कोटिशः धन्यवाद करते हैं। किम्बहुना मैं इस ग्रन्थकर्त्ता को सहर्ष धन्यवाद देता हुवा नम्र निवेदन करता हूँ कि भविष्यमें भी इसी भांति अपनी लेखनी धर्म और देशहित के लिये चलाते रहें।

ह० गौड़ सरदार पं० कृष्णभास्कर शर्मा,

पत्थरपुटा, श्रीवृन्दावनधाम जि० मथुरा।

२१७—पं० स्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी की बनाई हुयी श्रौतमुनि-चरितामृत पुस्तक को मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा। उपरोक्त पुस्तक हर प्रकार से सनातनधर्म के सिद्धान्तों का समर्थन करती है। और यह सनातनधर्म के सिद्धान्तों के आधार पर ही बनाई गई है। असल बात यह है कि श्रीगुरु श्रीचन्द्रजी अद्वितीय व्यक्ति उन प्रभावशाली सुधारक आचार्यों में से हैं, जिन्होंने इस धर्मकी जड़ें इतनीं पक्की कर दी हैं कि वह प्रलयतक नहीं उखेड़ी जासकतीं। वह सर्व प्रकार से जगद्गुरु थे, और प्रत्येक हिन्दू अपने पूज्यगुरु को जगद्गुरु की उपाधि देता है।

बालाप्रसाद जागीरदार,

हैदराबाद दक्षिण।

तारीख २६–सन् १३४२ फसली।

२१८—कृष्णचन्द्रराय सक्सेना—

प्रोफेसर जामे उसमानिया कालेज़,

हैदराबाद, दक्षिण।

श्रीस्वामी गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज मंडलीश्वर की बनाई हुई श्रौतमुनिचरितामृत नाम की पुस्तक मेरे दृष्टि गोचर हुयी। इसमें कोई ऐसी बात नहीं लिखी है जो सनातनधर्म के सिद्धान्तों से विरुद्ध हो। प्रत्युत पुस्तक लिख कर लेखक ने प्राचीन धर्म की सेवा की है।

ह० कृष्णचन्द्रराय सक्सेना,

ऋषीकेश, हैदराबाद, दक्षिण।

३०-९-३३.

२१९—श्रीमान् पूज्य स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज की बनाई हुयी श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तक को मैंने आदि से अन्ततक अक्षरशः ध्यान पूर्वक पढ़ा। मेरी समझ में यह पुस्तक किसी प्रकार से भी सनातनधर्म के विरुद्ध नहीं है। इस पर भी यदि किसी सनातनधर्मी भाई को संशय है तो समझिये उसने पुस्तक के विषय को नहीं समझा। नहीं तो संशय न करता। मेरी समझ में प्रत्येक ऐसा गुरु (जो कि दुनिया को साधारणतया सुख शान्ति और ज्ञान का सार्वजनिक उपदेश दे) जगद्गुरु कहा जा सकता है। श्रीगुरु श्रीचन्द्रजीमहाराज के उपदेश से सर्व जगत् सुख, शान्ति और ज्ञान, प्राप्त कर सकता है, इस लिये श्रीगुरु श्रीचन्द्रजी महाराज वास्तव में जगद्गुरु हैं। मैं इस उत्तम रचना के लिये बधाई देता हूँ।

सतगुरुप्रसाद वकील दर्जा अव्वल,

मुहल्ला हुसैनी अलम, हैदराबाद, दक्षिण।

मरासला अज दफ्तर
खत्री महासभा; हैदराबाद, दक्षिण ।

२२०—सेक्रेटरी खत्री महासभा हैदराबाद दक्षिण की ओर से
सेवामें श्रीस्वामी पं० गङ्गेश्वरानन्दजी महाराज ।

विषय—"श्रौतमुनिचरितामृत का समर्थन"

हमारी सभा के प्रतिष्ठित सभा सदस्यों ने श्रौतमुनिचरितामृत नामक पुस्तक को सर्वथा ध्यानपूर्वक पढ़ा, पूर्वोक्त पुस्तक के विषय में सभा की सर्व सम्मति यह है कि श्रौतमुनिचरितामृत में कोई विषय या शब्द ऐसा नहीं है, जो कि सनातनधर्म के सिद्धान्तों में विरुद्ध हो, प्रत्युत यह पुस्तक सनातनधर्म के प्रत्येक सिद्धान्त को इस अत्युत्तम रूप से प्रतिपादन करती है कि—एक नास्तिक भी पढ़ने के अनन्तर आस्तिक बने विना नहीं रहसकता, सच तो यह है कि स्वामीजी महाराज ने अत्यन्त परिश्रम से यह पुस्तक निर्माण की है उसका ज्ञान पुस्तक पढ़ने से ही हो सकता है। इस लिये हम इसके विषय में स्वामीजी महाराज को हार्दिक धन्यवाद देते हैं। और प्रत्येक सनातनधर्मी भाई से प्रार्थना करते हैं कि इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

नायव सदरनशीन कृष्णप्रसाद मनसवदार जजी
देवीप्रसाद मगनचंद वेदी
२-१०-३३

२२१—सन्तनारायण चोपड़ा सेक्रेटरी।

Youngmens. Kayesth
UNION
HYDERABAD
Dat. 1. oct. 1933

G. C. DASS, SAXENA
Secretary

हम और हमारी सभा के सदस्यों ने स्वामी पं० गङ्गेश्वरानन्दजी की बनायी हुई श्रौतमुनिचरितामृत नामक पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ा है। इसलिये हमारा विचार है कि उक्त पुस्तक हर प्रकार से सनातनधर्म की समर्थक होती हुई उसीके अनुसार है। हमारी सभा एक शुद्ध सार्वजनिक होते हुए भी दृढ़ता से सनातनधर्मपर स्थित है। इसके मेम्बरों में हैदरावाद के सुप्रसिद्ध पं० और योग्य आचार्य हैं। जिनका विचार इस विषय में अन्तिम माना जा सकता है जैसा कि इन पंडित महानुभावों की राय भी सर्वथा यही है जो ऊपर लिखी गई है।

प्रत्येक हिन्दू अपने आचार्य को जगद्गुरु कहता है, ऐसा कहने का उसको अधिकार है। इसलिये ऐसे सुधारक आचार्यों को (जिनमें श्रीगुरु श्रीचन्द्रजी को प्रथमश्रेणी में स्थान मिलता है) जगद्गुरु कहना किसी अवस्था में भी विरोधजनक नहीं हो सकता। प्रत्युत सर्वथा उचित ही है॥ इति॥

ह० जेनरल सेक्रेटरी
यंगमैन कायस्थ यूनियन
हैदराबाद दक्षिण।

هزاکسیلینسی راجه راجایان راجه سر کشن پرساد مهاراجه
بهادر یمین السلطنت بهارت بهوشن

کے—سي—آئي—اي—جي—سی—آئي—اي

پیشکار وصدر اعظم باب حکومت سرکار عالی

حیدرآباد دکهن +

ارجن بهون—لوال

۲۱ سیتمبر ۱۹۳۳ع

اِس فقیر نے شروت منی چریتامرت مصنفه سوامي گنگیشوراَنند اُداسی کا معائینه کیا اور بعض پنڈتوں کو بهي دیکهایا- اِسمیں کوئي بات سناتن دهرمیوں کے خلاف نهیں پائي جاتی- جن پنڈتوں نے دیکها آنکا بهي یهی بیان هے +

گورو شریچندرجي مهاراج کو عقیدتمندوں نے جگت گورو کها تو یه کوئي قابل اِعتراض بات نهیں- هرعقیدتمند کو اپنے گورو یا مرشد کو جگت گرو کهنے کا مجاز هے +

فقط

دستخط

کشن پرساد یمین السلطنت

Arjun Bhawan alwal

Dated 21 Sept. 1933

His Excelency Raja Rajayan Raja
Sir Krishna Prasad maharaja Bahadur
Yaminul saltanat Bharat Bhushan
K. C. I. E. G. C. I. E.
Peshkar Sadar Ajam
Bab Hukumat Sarkar Ali.

Hydrabad (Deccan.)

This Fakir has read the book styled as Shrautmunicharitamrit written by swami Gangeshwaranandaji Udasin, and showed to many other pandits as well. There is nothing in this book against Sanatan Dharmis. This is also the opinion of those pandits who have read it, Those, who reveren to Guru Shri chandraji maharaj. call him as Jagadguru, of course this is not objectionable in any way, Every follower has right to call his guru as Jagadguru.

Sd. Krishna Prasad

Yaminul Saltanat.

अर्जुन भवन अलवाल,
२१-९-३३ ई० ।

श्रीस्वामी गंगेश्वरानन्दजी उदासीन की बनाई हुयी श्रौतमुनिचरितामृत पुस्तक को इस फकीर ने पढ़ा । और कई एक पण्डितों को भी दिखलाया । इसमें कोई बात सनातनधर्मियों के विरुद्ध नहीं देखने में आई । जिन पण्डितों ने इस पुस्तक को पढ़ा उन की भी उपरोक्त सम्मति है, गुरु श्रीचन्द्रजी महाराज को यदि मानने वाले श्रद्धालुओं ने जगद्गुरु कहा है तो यह कोई आक्षेप जनक बात नहीं । प्रत्येक श्रद्धावान् अपने गुरुको जगद्गुरु कहने का अधिकार रखता है ।

हिज़ ऐक्सिलैंसी राजा राजायान् राजा
सर श्री कृष्णप्रसाद महाराजा बहादुर ।
यमीनुल् सल्तनत् भारतभूषण,
के० सी० आई० ई०, जी० सी० आई० ई० ।
पेशकारव़सदर आज़म बाबहुकूमत,
सरकारआली, हैदराबाद, दक्षिण ।

नोट—शीघ्रता के कारण जिनके हस्ताक्षर असुद्रित हैं वह क्षमा करें, क्योंकि द्वितीयावृत्ति में वह भी प्रकाशित होंगे । ता० ९-१०-१९३३ ई०

* विज्ञप्ति *

"पिबन्त्येवोदकं गावो मंडूकेषु रुवत्स्वपि ।
न ते धर्मे ऽधिकारोऽस्ति माभूरात्मप्रशंसकः ॥"

आजतो । १९३२ ई. तक श्रीमान् साधु जयेन्द्रपुरिजी ने [illegible] कार्य में भाग नहीं लिया है और न किसी धार्मिक संस्था [illegible] ही सहयोग दिया है । यदि कोई धार्मिक हित [illegible] [illegible] जयेन्द्रपुरि जी जनता की जानकारी के लिये प्रमाण दें।

[illegible] वर्ष जयेन्द्रपुरिजी ने अपनेही घर में एक सभा [illegible] एक सम्प्रदाय के विरुद्ध षड्यंत्र रचा । इसके लिये इन्होंने [illegible] [illegible] अनुचित संबन्ध भी कर लिया । हिन्दू समाज के [illegible] हिन्दू समाज को किसी भी रूप में भड़काना किसी धार्मिक [illegible] का कर्त्तव्य नहीं है । कौन नहीं जानता कि आप इस [illegible] सम्प्रदायों में परस्पर कलहका बीज आरोपण करके पर्वतों [illegible] की अनुपस्थिति में स्वा. रामपुरिजी महाराज ने शान्ति स्थापन करने के लिये संधि-चर्चा चलाई थी, परन्तु आपके काशी में पदार्पण करते ही वह सन्धि भंग होगई तथा फिर कलह आरम्भ होने लगा । यह कलह किसी साधारण व्यक्ति के द्वारा आरम्भ होता तो कुछ बात न थी, परन्तु आप के द्वारा देश में अशान्ति फैलाना कब सराहनीय हो सकता है हमें बाध्य होकर ही आपकी तरफ से होने वाली नोटिसबाजीका उत्तर देना पडा । इसमें हमारा कोई दोष नहीं । हम सच कहते हैं कि यदि आपकी तरफ से हमारे संप्रदाय पर कोई आक्षेप न होता, तो हमें भी आपके पन्थ के विरुद्ध कुछ न लिखना पडता । हम पुनः निवेदन करते हैं कि आप अब भी सत्यका अवलम्बन करें ।

न स्वेच्छं व्यवहर्तव्यमात्मनो भूतिमिच्छता ।
पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि ॥

निवेदक—मन्त्री—उदासीनसङ्घ, काशी ।